अगस्त, 1980
वर्ष 16 ❋ अंक 3

ज्ञानामृत

मूल्य 0.75 पैसे

मेरे प्यारे भाई !
राखी की शुभ बधाई !

यह राखी है निराली बहन-भाई का यह नाता
रक्षा करने वाली । पवित्रता मन में लाता ।
है यह शुभ प्रतीक रक्षा का यही आधार
सन्देश इसका सटीक इसी से सुख अपार ।
"विकारों को लो जीत राखी का त्योहार
करो प्रभु से प्रीत ।" ये सूती-रेशमी तार
योग से मिटता तनाव । कहते बारम्बार
अशान्ति से होय बचाव । लिये बहन का प्यार ।
निर्विकार निर्मल स्वभाव राखी पवित्रता का प्रतीक
होत न मन-मुटाव । विकारों को लो जीत
प्रभु का उस पर हाथ हे आत्मा के भाई !
रखता प्रभु को जो साथ राखी की शुभ बधाई

आपकी बहन

अमृत-सूची

1. दृष्टि बहन-भाई की, त्योहार रक्षाबन्धन का (सम्पादकीय) 1
2. रक्षाबन्धन—आज के संदर्भ में 4
3. श्री कृष्ण के बारे में एक विवेचन 6
4. युवकों का आह्वान 8
5. रक्षाबन्धन का वास्तविक रहस्य 14
6. आओ इसमें आहुति डालें (कविता) 16
7. सेवा समाचार (चित्रों में) 17
8. विश्व कल्याण महायज्ञ वाराणसी में हुई ईश्वरीय सेवा का समाचार 19
9. सुन्दरतम श्री कृष्ण आ रहे हैं (कविता) 20
10. आध्यात्मिक सेवा समाचार 21
11. राखी का त्योहार (कविता) 24

यह चित्र पोखरा (नेपाल) के प्रसिद्ध "डाफे क्लब हाल" में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। मंच पर पोखरा के सभापति, ब्र० कु० सुरेन्द्र व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

इस चित्र में ब्र० कु० सुदर्शन दार्जिलिंग में हरिजनों के कल्याणार्थ आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन कर रही हैं।

इस चित्र में ब्र० कु० निरूपमा पुरी जेल में आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए दिखाई दे रही हैं। वहाँ के वेलफेयर आफिसर, जेलर तथा अन्य बहन-भाई मंच पर बैठे हैं तथा कैदी बड़े ध्यान पूर्वक बहनों के प्रवचन सुन रहे हैं।

यह चित्र दार्जिलिंग के वाल्मिकी मन्दिर में हरिजनों के लिये आयोजित कार्यक्रम का है। ब्र० कु० कृष्ण कुमार एवं गुरुंग भाई आगे बैठे दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र सिडनी (आस्ट्रेलिया) में ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी, रमेश भाई एवं पुष्पा बहन के आगमन के अवसर का है। उनके साथ सेवा-केन्द्र की इन्चार्ज डा० निर्मला जी खड़ी हैं।

सम्पादकीय

दृष्टि बहन-भाई की, त्योहार रक्षाबन्धन का

मनुष्य के बहुधा कर्म उसकी अन्तर्दृष्टि अथवा बाह्य दृष्टि पर आधारित होते हैं। घर में अपने परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ उसका व्यवहार उसकी बाह्य दृष्टि पर आधारित होता है। माँ को माता की दृष्टि से देखकर वह आदरपूर्वक नमस्कार करता है और अपने बच्चे को पुत्र की दृष्टि से देखकर स्नेह से उसका नमस्कार स्वीकार करता है; दफ़्तर में वह अपने अफ़सर के प्रति सम्मान की दृष्टि रखता है, तो अपने सहकारी के प्रति एक दोस्त अथवा मित्र की भावना से व्यवहार करता और हंसी-मज़ाक करता है। वह अपने कर्मों की शिष्टता और अशिष्टता, सभ्यता और असभ्यता, मर्यादा और अमर्यादा को बाह्य दृष्टि पर आश्रित सम्बन्धों के आधार पर भी आंकता है।

दूसरी है अन्तर्दृष्टि। इसे ही 'अलौकिक दृष्टि', 'सूक्ष्म दृष्टि' अथवा 'दृष्टिकोण' भी कहा जाता है। यह मनुष्य की दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित होती है। मनुष्य जिन सिद्धान्तों अथवा आदर्शों को मानता है, वह इसमें समाये होते हैं। कोई मनुष्य तो यह मानता है कि—"यह संसार नश्वर है और यह शरीर एक बार मिला है; अतः मनुष्य को खूब खाना, पीना और मौज उड़ाना चाहिए।" इस दृष्टिकोण को लेकर वह अपना पेट और अपनी पेटी भरने में लगा रहता है और इस बात का ख्याल नहीं करता कि शरीर छोड़ने के बाद भी आत्मा को दूसरा चोला लेकर अपने कर्म का लेखा भोगना पड़ता है। इसके विपरीत, दूसरा व्यक्ति यह मानता है कि—"यह शरीर नाशवान है, यह संसार परिवर्तनशील है और परिणामी है और मनुष्य को किये हुए अपने कर्मों का फल—अच्छा या बुरा—इस जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में उसे भोगना पड़ता है।" अतः वह अपने कर्मों की आध्यात्मिक व्याख्या को मन में रखे हुए यथा-शक्ति मर्यादित करता है। तीसरे व्यक्ति को कभी तो वह 'कर्म-सिद्धान्त' और 'पुनर्जन्म का सिद्धान्त' अटल महसूस होते हैं और कई बार वह दूसरों के सम्मुख, उनकी विचारधारा के साथ बहकर, यह भी मान लेता है कि "दूसरा जन्म किसने देखा है, पता नहीं आत्मा है भी सही या नहीं; हम कई बुरे कर्म करने वालों को ख़ूब धन-दौलत और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए देखते हैं, अतः कर्म का सिद्धान्त संदिग्ध मालूम होता है"—इस प्रकार वह भी आचार-सम्बन्धी अपने दृष्टिकोण को बदलता रहता है और जिस समय उसकी जैसी धारणा, अर्थात् जैसी अन्तर्दृष्टि होती है, वैसा ही वह कर डालता है। संसार में नाना प्रकार के दृष्टिकोण वाले लोग हैं और उनकी विविध अन्तर्दृष्टि के कारण अनेक प्रकार के उनके कर्म हैं।

बाह्य दृष्टि और अन्तर्दृष्टि के बारे में स्पष्टीकरण

ऊपर हम बाह्य दृष्टि और अन्तर्दृष्टि का उल्लेख कर आये हैं। उनमें से प्रथम (बाह्य दृष्टि) के आधार पर वह अपने शरीरिक सम्बन्ध में बहन को बहन मानता है और अन्तर्दृष्टि के आधार पर उसके साथ अपने सम्बन्ध में सदा-सर्वदा अपनी वृत्ति को पवित्र, मर्यादित व निर्मल बनाये रखता है। गोया बाह्य दृष्टि उसके सामने बहन की आकृति और स्थूल सम्बन्ध को लाकर खड़ा कर देती है, परन्तु अन्तर्दृष्टि उसके स्नेह को अपवित्र नहीं होने देती, उसके मन को मलीन होने से बचाये रखती है और उसकी बुद्धि और विवेक में विकृति नहीं आने देती। यहाँ एक अन्य उदाहरण से इस बात को और अधिक स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा। नवरात्रि के अवसर पर हमारे देश में एक दिन छोटी-छोटी कन्याओं को बुलाकर उनके चरणों को धोने, उन्हें नमस्कार करने और उनका आदर-सम्मान करने की प्रथा प्रचलित है। अब बाह्य दृष्टिकोण से तो वे कन्याएं छोटी-छोटी पुत्रियों ही के समान हैं, परन्तु उस अवसर पर अन्तर्दृष्टि के आधार पर उन्हें पवित्र शक्ति रूपा

अथवा दुर्गा एवं अम्बा के स्थान पर मानकर, आयु और लौकिक सम्बन्ध को भूलकर, उनका सत्कार किया जाता है और उस समय जो मिष्ठान उन्हें खिलाया जाता है, जो भेंटा उन पर चढ़ाई जाती है, वह एक छोटी बेटी या पुत्री की दृष्टि से नहीं, बल्कि 'माँ शक्ति' के रूप से की गई होती है।

अन्तर्दृष्टि के आधार पर हमारा सम्बन्ध

इस बात को सामने रखते हुए हमें यह समझना चाहिए कि बाह्य दृष्टि से तो हम सबके स्व-स्व अलग-अलग लौकिक नाते हैं, परन्तु यदि आध्यात्मिक दृष्टि, अन्तर्दृष्टि, दार्शनिक दृष्टि अथवा तत्त्व दृष्टि से देखा जाये तो आत्मा और आत्मा के नाते से अथवा एक परमात्मा की सन्तति होने के कारण से हम सब में 'भाई-भाई का सम्बन्ध' है। यदि बाह्य दृष्टि और अन्तर्दृष्टि को समन्वित कर दिया जाये, तो हम में 'भाई-भाई', 'भाई-बहन' अथवा 'बहन-बहन' का सम्बन्ध है।

'विश्व-भ्रातृत्व' अथवा हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई की बात किस आधार पर टिकी है ?

हमारे इस विश्लेषण को सुनकर कुछेक लोग अट्टहास करते हुए प्रश्न करते हैं—"अरे वाह, आपकी इस व्याख्या से तो पति-पत्नी भी भाई-बहन ठहरते हैं !" हम इसका उत्तर देने से पहले ऐसे भाइयों और ऐसी बहनों से नम्रतापूर्वक पूछना चाहते हैं कि—"आज 'विश्व-भ्रातृत्व' (World Brotherhood) की जो बात उठाई जाती है, वह भला किस आधार पर टिकी है ? आज जब हम 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई,' हिन्दी-रूसी भाई-भाई'—जैसे नारे लगाते हैं, तब उनकी बुनियाद क्या होती है ? क्या सभी हिन्दू और सभी मुसलमान शारीरिक नाते से एक ही पिता की सन्तति हैं कि हम सभी परस्पर एक-दूसरे को भाई-भाई मान लें ? उत्तर होगा—'नहीं।' पुनश्च, जब हम एक संस्था और दूसरी संस्था अथवा एक देश और दूसरे देश में भाई-चारे की बात कहते हैं, तब क्या वह दोनों संस्थायें एक ही संस्थापक की कृतियाँ होती हैं ? ऐसा तो कोई जरूरी नहीं। जब हम किन्हीं दो व्यावसायिक कम्पनियों को 'सिस्टर कन्सर्न्स' (Sister Concerns), अर्थात् बहन-जैसे सम्बन्ध वाली व्यावसायिक संस्था मानते हैं, तब भला हमारा ऐसा कहने का क्या भाव होता है ? स्पष्ट है कि 'भाई-भाई', 'भाई-बहन', अथवा 'बहन-बहन' के सम्बन्ध में जो एक निर्मल स्नेह है और उनमें जो पवित्रता है, उसकी ओर ही हमारा संकेत होता है और, जैसे कि हम पहले कह आये हैं, इस स्नेह की पवित्रता, इस सम्बन्ध की निर्मलता हमारी अन्तर्दृष्टि पर आधारित है। तो जब हम 'सारे विश्व के लिए भ्रातृत्व' की बात कहते हैं, तब क्या पति और पत्नी को छोड़कर बाकी सबके लिए वह नारा होता है ? हम समझते हैं कि ऐसा तो नहीं होता।

पति-पत्नी, पिता-पुत्र आदि के सम्बन्धों पर ऐतिहासिक वृत्तान्त के परिप्रेक्ष्य में विचार

इतिहास में ऐसी प्रचुर सामग्री है, जो प्रायः हमारे जीवन के बहुत-से प्रश्नों पर प्रकाश डालती है। आइये, ज़रा इस प्रश्न को भी इतिहास के झरोखे से देख लें। भारत के इतिहास में कई स्वर्णिम पृष्ठ हमारे देश की संस्कृति और उसके गौरव को ऊँचा करने वाले हैं। किसी संकीर्ण विचार वाले को छोड़कर देश का हर उदार व्यक्ति उनको अपनी ही गौरव-गाथा मानता है और उनके कारण वह विश्व में अपने सिर को ऊँचा उठाकर चलता है। क्या हमारे इतिहास में ऐसे रोमांचकारी, प्रेरणादायक, उल्लासवर्द्धक प्रसंगों की कमी है ? इधर अपने ही एक प्रदेश राजस्थान के इतिहास में हम पढ़ते हैं कि जब गुप्तचरों द्वारा यह सूचना मिलती कि आक्रमणकारी बर्बरता के हाथों में नंगी तलवारें लिए हमारी धरती पर दौड़े आ रहे हैं, तो राजपूत वीरांगनायें ख़ुशी-ख़ुशी से अपने-अपने पति को अथवा मातायें अपने सपूतों को तिलक देकर कहतीं—"टूट पड़ो इन दुश्मनों के सीनों पर ! देखो, आज अपनी माँ के दूध की लाज रख लेना। अगर हार जाओ तो वापस मुँह मत दिखाना।" क्या साधारण परिस्थितियों में कभी कोई माँ अपने बच्चे को छोटा सा घाव होते भी देख सकती है। जो माँ अपने बच्चे के आराम के लिए स्वयं अपनी नींद को गँवाकर बच्चे को चैन की नींद सुलाती है और एक माली की तरह उस पौधे को सींच कर तथा उसका संरक्षण करके उसको बड़ा करती है, क्या कभी वह यह बर्दाश्त भी कर सकती है कि उसके जीवित होते उसके ललना का बाल भी बाँका हो ! वह भारत माता के लिए अथवा अनेक माताओं और उनकी पीढ़ियों को गुलाम बनने से बचाने के लिए अथवा एक ऊँचे आदर्श

के लिए उसे न्योछावर कर देती है और कहती है—"कायर बनकर युद्ध से वापिस मत लौटना, हार जाओ जो मुझे मुँह मत दिखाना!" तो हम पूछते हैं कि माँ की अपने पुत्र के प्रति ममता जो जगत-प्रसिद्ध है, ऐसे अवसर पर बलि क्यों चढ़ा दी जाती है? उस समय माँ वात्सल्य और करुणा को छोड़कर विकराल रूप क्यों धारण कर लेती है? जिस पुत्र को उस दिन तक वह घर का चिराग़ मानती, बुढ़ापे की लाठी कहती, आँखों का नूर बताती, उस स्थिति में उन सब बातों को भूलकर, वह स्वयं ही अपनी आँखों से ओझल करने के लिए तैयार कैसे हो जाती है? स्पष्ट है कि उसकी अन्तर्दृष्टि, उसके सामने एक ऊँचा आदर्श, एक ऊँचा लक्ष्य, सारे देश का हित अथवा अत्याचारियों के प्रतिरोध की भावना उसे अपने सम्बन्ध के स्वरूप में एक क्रान्ति लाने पर मजबूर कर देते हैं अथवा उसकी दृष्टि और वृत्ति को बदल देते हैं।

भारत का इतिहास ऐसे वृत्तान्तों से भरा पड़ा है। पंजाब और कश्मीर के क्षेत्र में गोविन्दसिंह ने स्वयं अपने मुख से अपने पिता, गुरु तेगबहादुर को धर्म के लिए बलिदान देने को कहा और अपने लाडलों के दीवारों में चिने जाने पर भी उन्होंने परवाह नहीं की और उनको बचाने के लिए उन्होंने आततायियों के सामने हथियार नहीं डाले। उधर महाराष्ट्र में शिवाजी की माता जीजाबाई ने यह जानते हुए भी कि मुगल साम्राज्य एक बहुत शक्तिशाली साम्राज्य है और उससे टक्कर लेना शिवाजी या अन्य किसी के लिए ख़तरे से ख़ाली नहीं है, माता-पुत्र के सम्बन्ध से मोह रूप विकृति को त्यागते हुए माँ की बजाय कमान्डर बनकर दुर्ग की ओर इशारा करते हुए उस पर झंडा लहराने के लिए उसमें जोश भरा। ऐसे कितने दृष्टान्त दें? कहने का भाव यह है कि समय पर, देश की ख़ातिर, धर्म के लिए अथवा किसी आदर्श को लेकर पत्नी ने पति से पुत्र की माँग न करके उसे रण की ओर भेजा। गोया उस समय उस युवक और युवती ने वासना को त्याग दिया। इसी प्रकार, माता ने अपने कोमल हृदय की कोमलता और अपने वात्सल्य को एक ओर रख कर अथवा मोह को पराजित करके, पुत्र-शोक की परवाह न करके, स्वयं अपने हाथों से उसे वीरता का तिलक दिया। ऐसे ही बच्चे ने अपने पिता के संरक्षण और उसकी छत्र-छाया के मिट जाने के भय को छोड़कर अपने प्रिय पिता के बलिदान होने को सहा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि समय पर किसी महान् उद्देश्य को सामने रखकर, पति-पत्नी अपने सम्बन्ध की वासना को, माता अपने मोह को, पिता अपने पुत्र के आसक्ति भाव को और पुत्र अपने पिता की मृत्यु के भय को स्वेच्छा से छोड़ देते हैं अथवा जीत लेते हैं और ऐसे ही वृत्तान्त किसी देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षर से लिखने योग्य होते हैं। ऐसे ही लोगों का चरित्र आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है। ऐसे ही लोगों के जन्म-दिन मेलों और उत्सवों के रूप में मनाये जाते हैं और उनकी याद-गारें कायम की जाती हैं। उनके कर्तृत्व अट्टहास का विषय नहीं, गौरव और उल्लास का विषय होते हैं।

अब यदि ऐसी ही अन्तर्दृष्टि से देखा जाये, तो आज की विकट परिस्थिति में, जब विश्व में भ्रातृत्व की भावन समाप्त होती जा रही है, तो 'आत्मा-आत्मा भाई-भाई' की दृष्टि अथवा 'भाई-बहन' या 'बहन-बहन, की दृष्टि को फिर से उजागर करना समय की माँग है। आज उससे होने वाली अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्यायें, दिन-दहाड़े होने वाले अपहरण, छेड़-छाड़ और बलात्कार की घृणित वारदातें तथा जो विनाश की विभीषिका जनसंख्या में अति वृद्धि और उससे होने वाली अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ दिन दहाड़े होने वाले अपहरण, छेड़छाड़ और बलात्कार की घृणित वार-दातें, मिलावट, जमाख़ोरी और डकैती आदि-आदि का जो दूषित वातावरण है, उस सब का एकमात्र इलाज है—विश्व भ्रातृत्व की भावना को दृढ़ बनाना और यह लक्ष्य 'भाई-भाई' अथवा 'भाई-बहन' की दृष्टि अपनाने से ही हो सकता है और विश्व-भ्रातृत्व के नारे में पिता-पुत्र, जीजा और साला, पति और पत्नी कोई भी अपवाद (exception) रूप नहीं है बल्कि वासना, मोह, भय आदि उपरोक्त वृत्ति ये को समाप्त करने के लिए यह सभी का हितकारक एकमात्र अचूक उपाय है। यह विश्व में क्रान्ति ला ने का मूल मन्त्र है, एक सार्वभौम नारा है, एक दिव्य शस्त्र है, एक बलशाली विचार है और हमारे आचारण को मर्यादित करने वाला एक स्म रणीय सूत्र है जो हमारे देश के र क्ष-बन्धन के त्योहार में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाया हुआ है।

रक्षाबन्धन—आज के संदर्भ में

चिरातीत से बहनें भाइयों की कलाई पर श्रावणी पूर्णिमा को राखी बाँधती चली आ रही हैं। भारत का यह त्योहार विश्व-भर में अपनी प्रकार का एक अनूठा ही त्योहार है। भाइयों को स्नेह सूत्र में बाँधने की यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी भाव-भीनी रस्म है। इस दिन छोटी-छोटी आयु की कन्यायें भी नहा-धोकर अपने भाइयों को राखी बाँधने को तैयार हो जाती हैं। अपने भाइयों के प्रति कितनी शुभ भावना और शुभ कामना समाई होती है हरेक बहन के मन में! अपने भाई का मुख मीठा कराने के लिए कितना प्रेम होता है, उनके हाव-भाव में! इसी प्रकार, कितनी खुशी होती है उस दिन भाई को अपनी बहन से मिलकर। सारे वातावरण में एक हर्ष और उल्लास भरा होता है। हर चेहरे पर मधुर मुस्कान होती है और हर हृदय में स्नेह के स्पन्दन और हो भी क्यों न, भाई-बहन का सम्बन्ध एक बहुत ही पवित्र और निर्मल स्नेह को लिए हुए होता है। यदि पहले कभी परस्पर कोई मन-मुटाव की बात हो भी गई हो, तो वह आज के दिन भुला दी जाती है और फिर दोनों ओर उसी स्नेह के सम्बन्ध की याद आ जाती है।

बहन की रक्षा के लिए सहर्ष स्वीकार किया गया एक अनोखा बन्धन

इस त्योहार के पीछे यह मान्यता प्रचलित है कि बहन अपने भाई को राखी बाँधकर उससे यह अपेक्षा करती है कि जब-कभी बहन पर दुःख की घड़ी आयेगी, तो भाई उससे सहानुभूति और सहयोग का व्यवहार करेगा और जब कभी बहन की आन पर आँच आने लगेगी, तो भाई अपनी जान की बाज़ी लगाकर भी अपनी बहन की आन की रक्षा करेगा। कहते हैं कि इसलिए ही इसका नाम है—'रक्षा बन्धन'। सूत के रंगे हुए धागों में अथवा आज की रेशमी-चमकीली-नायलोन की डोर में बहन का भाई के प्रति ये मौन सन्देश भरा होता है कि—"भैया, आज तेरी इस कलाई पर इस आशा से यह राखी बाँधती हूँ कि तेरा यह बाजू अपनी इस बहन की लाज की रक्षा करने में सदा समर्थ सिद्ध हो।" कैसी है भारत की यह अद्भुत परम्परा कि भाई अपने हृदयों में अपनी बहन के प्रति स्नेह-समुद्र को बटोरे हुए सहर्ष स्वीकार करता है, इतने बड़े बन्धन को और इसी स्वीकृति से सन्तुष्ट होकर बहन अपना हाथ बढ़ाकर मुख मीठा कराती है अपने भैया का! ५-१० मिनट की इस रस्म में भारतीय संस्कृति की वह झलक सामने आ जाती है कि किस प्रकार यहाँ बहनों और भाइयों में एक मासूम उम्र से लेकर जीवन के अन्त तक एक-दूसरे से प्यार का यह सम्बन्ध अटूट बना रहता है। यह धागा तो एक दिन टूट जाता है, परन्तु मन को मिलाने वाले स्नेह के सूक्ष्म सूत्र नहीं टूटते। यदि वह तार किसी पारिवारिक तूफ़ान के झटके से टूट भी जाता है, तो फिर अगली राखी पर फिर से नया सूत्र उस स्नेह में एक नयी ज़िन्दगी और नयी तरंग भर देता है। इस प्रकार यह स्नेह की धारा जीवन के अन्त तक ऐसे ही बहती रहती है जैसे कि गंगा की अपने उद्गम स्थान से लेकर सागर के संगम तक कहीं तेज़ और कहीं मधुर गति से प्रवाहित होती रहती है।

'प्रिय बहनो और भाइयो'—इन शब्दों में निहित गूढ़ दार्शनिकता

सचमुच भारत-भूमि की मर्यादायें और यहाँ की रस्में एक बहुत ही गहरे दर्शन को स्वयं में छिपाये हुए हैं। इनको हम जितना समझते हैं, उससे भी अधिक इनमें गहराई मालूम होती है। बहनों और भाइयों का स्नेह जो विश्व के समक्ष एक ऊँचा आदर्श उपस्थित करता है। यह स्वयं में एक जागृति का प्रतीक है और एक महान संस्कृति का द्योतक है।

यह वृत्तान्त विश्व-ज्ञात है कि जेनेवा में विश्व-धर्म-सम्मेलन में जहाँ हर धर्म का वक्ता श्रोताओं को 'प्रिय मित्रो' (Dear Friends) कह कर सम्बोधित कर रहा था, तब भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रतिनिधि, विवेकानन्द ने अपने सम्बोधन में कहा

था—'प्रिय भाइयो और बहनो' (Dear Brothers and Sisters !) तब वहाँ का हॉल (Hall) उपस्थित जनों की तालियों से गूँज उठा था और चहुँ ओर से आवाज़ आई थी—"हियर, हियर" (वाह ! वाह ! !), क्योंकि निश्चय ही बहन और भाई के सम्बन्ध में जो स्नेह है, वह एक अपनी ही प्रकार का निर्मल स्नेह है कि जिसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं ! इसमें एक विशेष प्रकार की आत्मीयता है, एक निकटता है और एक-दूसरे के प्रति एक हित-भावना है। "प्रिय बहनो और भाइयो"—इन शब्दों में वहाँ के विश्व-धर्म-सम्मेलन के श्रोताओं ने सब प्रकार के झगड़ों का हल निहित महसूस किया था। इन शब्दों ने ही भारतीय संस्कृति के झंडे को सबके समक्ष बुलन्द किया था।

आज कहाँ गयी हमारी वह संस्कृति ?

परन्तु इन स्नेह-सिक्त शब्दों, जिनमें कि बड़े-बड़े दार्शनिकों ने गूढ़ दार्शनिकता पाई थी और धार्मिक नेताओं ने धर्म का सार पाया था, वे अपने आदि स्थान भारत से प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। आज हर आये दिन समाचार पत्रों में कभी उत्तर प्रदेश के बागपत काण्ड या नारायणपुर काण्ड तथा कभी मध्य प्रदेश के दुर्ग काण्ड या नन्दिनी खदान की रुक्मिणी काण्ड तथा हरियाणा के डबवाली काण्ड का समाचार पढ़कर हृदय वेदना से कराह उठता है कि क्या हुआ है हमारे भारत की संस्कृति को। जिस देश के एक आख्यान में बताया गया है कि एक सीता के चुराये जाने पर सारी लंका ध्वस्त कर दी गयी, वहाँ के नगर-नगर में नारियों की लाज लुट रही है ! आज एक अबला की चीखो-पुकार को सुन कर भाई में बहन के प्रति रक्षा का वह भाव जागृत नहीं होता, बल्कि कौरव सभा के सभासदों की तरह वे कठमुल्ला होकर, पथराई हुई आँखों से देखते रहते हैं, मानो कि उन्हें काटो, तो उनमें लहू नहीं। आज उस भारत को नारी की लाज लुटने के घिनौने वृत्तान्त सुनते-सुनते हरेक भारतवासी का मन मायूस हो गया है। एक समय था कि जिसके बारे में कहा जाता था—'नारयस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः', अर्थात जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं। परन्तु आज स्थिति ऐसी है कि आज भारत की हर देवी, हर नारी, हर बहन स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं करती, बल्कि उसे किसी आततायी अथवा किसी दुराचारी से अपनी साड़ी छिन जाने का डर लगा रहता है। और तो क्या, स्वयं आरक्षक दल से उन्हें एक काल्पनातीत भय महसूस होता है। इधर विश्व-विद्यालयों में अभद्रता पूर्व रैगिंग (Ragging) के भद्दे समाचार मिलते हैं। गोया आज राखी का त्योहार बहन और भाई में एक अर्थहीन रस्म-मात्र बनकर रह गया है, जिसमें बहनें एक बढ़िया-सी राखी अपने भाई को बाँध देती हैं और भाई अपनी बहन को कुछ पैसे दे देता है, परन्तु बहन और भाई की दृष्टि अथवा बहन और भाई की वृत्ति, अर्थात स्नेह का निर्मल स्वरूप, जो इस त्योहार का मूल था, लुप्त प्रायः होती जा रही है। अतः आज के सन्दर्भ में राखी की घिसी-पिटी रस्म की बजाय एक नये दृष्टिकोण से इस त्योहार को मनाने की ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में अर्थ-बोध के बिना राखी मनाने की बजाय अब राखी के मर्म को जानकर इसे मनाते हुए वातावरण को बदलने की ज़रूरत है।

राखी—आज के सन्दर्भ में

आज हर बहन जब अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधे तो वह राखी इस बात का प्रतीक हो कि—"भैया, जैसे तुम अपनी इस बहन को एक निर्मल स्नेह की दृष्टि से देखते हो और अपनी इस बहन की रक्षा का संकल्प लेते हो, वैसे ही इस सूत्र को बाँधकर अपने मन में यह प्रतिज्ञा करो कि तुम भारत की, नहीं-नहीं विश्व की, हर नारी को बहन की दृष्टि से देखोगे। तुम हर माता-बहन की लाज का ख़्याल रखोगे। ऐसी हो राखी घर-घर में आज के सन्दर्भ में।

श्री कृष्ण के बारे में एक विवेचन

भारत की धार्मिक परम्परा में एक उक्ति है—"अन्ये तु अंश अवतारा: कृष्णस्तु भगवान् स्वयं" इसका अर्थ यह होता है कि राम आदि में तो ईश्वरीय गुण आंशिक रूप में थे, परन्तु "कृष्ण" स्वयं भगवान का नाम है। इस बात को लेकर कुछ लोग यह मानते हैं कि श्री कृष्ण भगवान थे अथवा भगवान का सम्पूर्ण अवतार थे। परन्तु आज जो श्री कृष्ण की जीवन-गाथा मिलती है, उसके आधार पर बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई आदि अनेक धर्म-विश्वासी लोग श्री कृष्ण को भगवान मानने को तैयार नहीं हैं। अब प्रश्न उठता है कि क्या कारण है कि कुछ लोग तो इस बात पर बल देते हैं कि श्री कृष्ण भगवान ही थे और अन्य लोग उनके कार्य-कलापों को सामने रखते हुए उतने ही बल से कहते हैं कि वे भगवान नहीं थे। अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि दोनों की मान्यता में यह अन्तर क्यों है और सत्य को ग्रहण करने की इच्छा वाले मनुष्य को क्षीर-नीर विवेक का प्रयोग करते हुए इसमें से किस बात को कितना यथार्थ मानना चाहिए।

वास्तव में बात यह है कि भगवान में आस्था रखने वाले लोग भगवान में कुछेक मुख्य गुणों का होना नितान्त अनिवार्य मानते हैं। उन्हीं गुणों को लेकर वे भगवान के होने या न होने के बारे में निर्णय करते हैं। उदाहरण के तौर पर वे मानते हैं कि भगवान ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, प्रेम के सागर, सर्व शक्तिमान, परमपवित्र और कल्याणकारी हैं। पुनश्च, उनकी यह भी धारणा है कि **भगवान के ये गुण परस्पर विरोधी नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर भी भगवान अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं तो वह प्रयोग हिंसात्मक रूप में नहीं होना चाहिए, वरना उनका यह गुण शान्ति एवं प्रेम रूपी गुणों के विपरीत होगा।** इस प्रकार यदि श्री कृष्ण की प्रचलित गाथा पर विचार करें तो उनके द्वारा कई बार युद्ध और हिंसा होने के जो वृत्तान्त बताये जाते हैं, उनको देख कर अहिंसावादी धर्मावलम्बी लोग उन्हें भगवान मानने में बाधा रूप समझते हैं, इसी प्रकार, कुछ लोग श्री कृष्ण की कई-एक ऐसी भी प्रेम-लीलाओं के वृत्तान्त वर्णित करते हैं, जिनमें प्रेम तो झलकता है परन्तु वह पवित्रता-रूपी गुण का विरोधी मालूम होता है। इस तरह भगवान के गुणों को दर्शाने वाले अन्य भी जो वृत्तान्त लोग कृष्ण की लीलाओं अथवा चरित्र के रूप में गाते हैं, उनसे लोगों का नितान्त कल्याण होता प्रतीत नहीं होता। अत: भगवान के गुणों में इस प्रकार का विरोध देखकर कई लोग श्री-कृष्ण को भगवान या उसका अवतार मानने से इन्कार करते हैं और अन्य लोग उन्हीं गुणों और वृत्तान्तों को लेकर उन्हें भगवान मानते हैं।

अब वास्तव में यदि निष्पक्ष भाव से विचार किया जाए, तो यह मानना होगा कि **भगवान के अनेक गुणों में परस्पर विरोध नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भगवान के सभी गुण उनमें एक साथ, स्थाई रूप से वास नहीं करते।** इसी बात को लेकर यदि हम विचार करें, तो एक निष्कर्ष तो यह निकलता है कि इसयुक्ति का वास्तविक अर्थ तो यह है कि "कृष्ण" भगवान ही का गुणवाचक नाम है, क्योंकि "कृष्ण" शब्द का अर्थ "आकर्षण करने वाला", "बुराइयों से छुड़ाने वाला" अथवा "आनन्द स्वरूप" है।

परन्तु जो भक्त श्री कृष्ण को ही अपना इष्ट मानते हैं, वे यह तो मानेंगे कि कृष्ण स्वयं भी भगवान थे। अब यदि इस दूसरी बात को लिया जाये, तो इस आस्था के पीछे भी कुछ रहस्य है। उनमें से मुख्य रहस्यों का हम यहाँ स्पष्टीकरण करते हैं। पहली बात तो यह है कि श्री कृष्ण से आज जो वृत्तान्त सम्बधित किये जाते हैं, उनका अर्थ अथवा उनकी व्याख्या समयान्तर में बहुत बदल गई लगती हैं। उदाहरण के तौर पर श्री कृष्ण द्वारा गोपियों के चीर हरण की जो बात है, उसे आज लोग स्थूल अर्थ में लेते हैं, जबकि वातव में वह एक आध्यात्मिक वृतान्त की एक रूपक द्वारा अभिव्यक्ति है। कहने

का भाव यह है कि वास्तव में इसके द्वारा बताने का अभिप्राय तो यह रहा होगा कि भगवान ने शरण लेने वालों का अथवा न्योछावर होने वालों का देह रूपी वस्त्र के भान से मुक्त कराया। इसी प्रकार, गीता-ज्ञान देकर युद्ध कराने का जो वृत्तान्त है, उसे समयान्तर में लोगों ने एक हिंसा—प्रधान युद्ध मानलिया यद्यपि यह आसुरी सम्पदा न कि सम्प्रदाय से किया जाने वाला युद्ध है। यदि इस प्रकार उन सभी वृतान्तों की ऐसी व्याख्या मानी जाये जो भगवान के अनेक गुणों में परस्पर विरोध को लिए हुए न हो तब तो शायद किसी को भी यह मानने में इन्कार न होगा कि यह वृतान्त स्वयं भगवान के ही चरित्र थे क्योंकि आध्यमिक दृष्टिकोण से तो यह मानव-मात्र का कल्याण करने वाले और उन्हें पवित्रता, शान्ति, प्रेम आदि से युक्त करने वाले ही सिद्ध होते हैं। ऐसी व्याख्या स्वीकार कर लेने पर उन लगों पर आपत्ति तो नहीं रहेगी जो इन वृतान्तों का स्थूल अर्थ लेने के कारण इन्हें भगवान के गुणों का विरोधी मानते हैं परन्तु जो लोग देवकीनन्दन वसुदेव सुत ही को श्री कृष्ण के रूप में अपना इष्ट तथा भगवान मानते हैं, उन्हें शायद इस व्याख्या से भी पूर्ण तृष्टि नहीं होगी। इसके लिए उन्हें यह समझना होगा कि अन्धेरी रात में जन्म का होना, देवकी और वसुदेव का कारावास में बन्द होना आदि-आदि वृतान्त रूपक हैं। इनका अर्थ यह है कि घोर अज्ञानान्धकार के समय जबकि पृथ्वी रूपी वसु बसने की जगह पर भूतपूर्व देव विकारों रूपी कंस की कारावास में होते हैं तब भगवान ऐसी कारावास में उनके पास आकर जन्म लेते हैं। इस प्रकार 'वसुदेव' और 'देवकी' नाम भी संज्ञावाचक न होकर अर्थ-वाचक हैं। कहने का भाव यह है कि 'कृष्ण' नामक व्यक्ति से प्रायः जो वृनान्त सम्बद्ध हैं, वे वास्तव में वे न केवल दिव्य अर्थ को लिए हुए हैं। बल्कि वे परमात्मा ही से सम्बन्धित हैं —ऐसा जान लेने पर किसी भक्त को यह बात समझ में आ सकती है कि वास्तव में ये सब वृतान्त जिस कृष्ण से सम्बन्धित हैं, वह कृष्ण किसी माता के गर्भ से जन्म लेने वाला, किशोरावस्था से युवा-वस्था को प्राप्त होने वाला या किसी स्वदर्शनचक्र नामक स्थूल शस्त्र से इसका वध और उसकी हत्या करने वाला और कर्म-जन्य शरीर धारण करने वाला कृष्ण नहीं था, बल्कि "कृष्ण" नाम भगवान ही का एक गुणवाचक नाम है जो कि अज्ञान रूपी रात्रि में किसी मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं, उन्हीं के ये रूपकों में वर्णित चरित्र हैं। मक्खन को चुराने, अकासुर, बकासुर का उद्धार करने, अर्जुन के रथ का सारथी बनने आदि-आदि जितने भी वृत्तान्त हैं जो स्थूल अर्थ में भगवान की भगवत्ता के विरोधी प्रतीत होते हैं, उन सब का अलौकिक अर्थ समझने से उनका वैपरीव्य भव नहीं रहता और उनसे यह सिद्ध होता है कि ये मानवी कर्त्तव्य न होकर ईश्वरीय कर्त्तव्य हैं, जो कि ज्योति स्वरूप भगवान ने किसी मनुष्य के तन में प्रविष्ट होकर किये।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि यदि "कृष्ण" नाम ज्योति-स्वरूप परमात्मा का वाचक है, तो फिर मोर मुकुटधारी श्री कृष्ण कौन थे। जिनकी प्रति-मायें भारत के हज़ारों मन्दिरों में पूजी जाती हैं। इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे श्री कृष्ण भारत के सर्वप्रथम राजकुमार थे, जिनके उज्ज्वल चरित्र के कारण देवालयों में उन्हें पूजा जाता है। उनका मुकुट ही इस बात का प्रमाण है कि वे राज सत्ता सम्पन्न थे। और उनके मुकुट में मोर पंख इस बात का प्रतीक है कि वे पवित्र थे। परन्तु जैसे आज लोग किसी महान मनुष्य को भगवान मानने लगते हैं, वैसे ही उन्होंने महान मनुष्यों से भी महान, देवों में भी शिरोमणी देव, गुण मूर्त, सलोनी सूरत श्री कृष्ण को भी भगवान मान लिया, परन्तु वास्तव में तो भगवान एक ज्योति स्वरूप, अजन्मा परमपिता ही का नाम है और कृष्ण एक गुण वाचक नाम है, जिसको ही लेकर उन्होंने श्री कृष्ण को भगवान और भगवान को श्री कृष्ण मान लिया। ●

"युवकों का आह्वान"

ले० ब्रह्मा कुमार सूरजकुमार, आबू

पात्र-परिचय

१. एक नेता जी
२. रघुबीर सिंह—विद्यार्थी नेता
३. रणधीर सिंह—विद्यार्थी महामंत्री
४. योगानन्द—एक ब्रह्माकुमार, राजयोग का अभ्यासी व प्रचारक
५. कुमारी निर्मला—ब्रह्माकुमारी, स्थानीय ब्रह्माकुमारी आश्रम की इन्चार्ज
६. विद्यार्थी समूह
७. श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ
८. सरकारी अधिकारी—जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक, पुलिस इन्सपेक्टर, शिक्षा निर्देशक, प्रधानाध्यापक

"प्रथम दृश्य"

रघुबीर सिंह के घर का अध्ययन कक्ष। साथ में कुर्सी पर रणधीर सिंह बैठे हैं। मेज पर पुस्तकें रखी हुई हैं। दोनों आपस में बातचीत कर रहे हैं।

रघुबीर—परीक्षा के १० दिन रह गये रणधीर। सब तैयारी हो गई···?

रणधीर—हाँ, इस बार कॉलेज में अच्छी पढ़ाई रही। परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

रघुबीर—अगर भगवान ने चाहा, तो इस बार मेरी प्रथम श्रेणी रहेगी। इस बार कॉलेज का सत्र निर्विघ्न चला और हमारे प्रधानाध्यापक बड़े ही सतर्क रहे।

राजनीतिक नेता का प्रवेश—लम्बा खादी का कुर्ता, पाजामा व टोपी पहने हुए। राज्य के जाने-माने नेता हैं। हाथ में छड़ी है।

दोनों उठकर नमस्ते करते हैं।

रघुबीर—आइये, नेता जी। आज हमारे घर आने का मौका कैसे बना ?

नेताजी—आप युवकों की आवश्यकता पड़ गई हमें। आपका नया रक्त ही देश में रामराज्य ला सकेगा बेटा !

रघुबीर—बोलो नेता जी, अगर हमारे रक्त से भी देश का उत्थान हो, तो हमें कोई हिचक नहीं होगी।

नेता—बेटा, आप तो जानते ही हैं, हमारे राज्य की हालत···भ्रष्टाचार व अव्यवस्था ज़ोर पकड़ रही है और हमारे नेता चादर तानकर सो रहे हैं। हमें ऐसी लापरवाह सरकार नहीं चाहिए। हमें यह सरकार बदलनी है। आप हमारा साथ दें बेटा···! देखो, महँगाई पर नियंत्रण नहीं, गरीबों पर अत्याचार हो रहे हैं। क्या वर्णन करूँ, सबकी हालत देखकर मेरा तो मन रो पड़ता है।

रणधीर—हमसे आप क्या चाहते हैं ? हम इन सोये नेताओं को जगाएँ ? यह तो आपका ही काम है। हम इन राजनीतिक चक्करों में क्यों जाएँ ? विद्यार्थियों को तो इन चक्करों से दूर ही रहना चाहिए।

नेता—तुम ठीक कहते हो बेटा, परन्तु जब समय ही ऐसा हो, तो देश-प्रेमियों को पीछे नहीं हटना चाहिए। महात्मा गाँधी ने भी तो देश को गुलामी से छुड़ाने के लिए विद्यार्थियों का ही आह्वान किया था। आवश्यकता पर, समस्याओं में मर्यादा तोड़नी भी पड़ती है। तुम तो साहसी हो बेटा। मैं तुम्हारे पास से निराश होकर नहीं जाना चाहता।

रघुबीर—नेता जी, आप चाहते क्या हैं ?

नेता—बस थोड़ी सी बात। परीक्षाओं का बहिष्कार सारे राज्य में कर दो और स्ट्राइक का आह्वान करो।

रघुबीर—ओहो ! इतना बड़ा अनर्थ ? हमसे यह नहीं होगा। कितने विद्यार्थियों का एक वर्ष बरबाद होगा और कितने ग़रीब माँ-बाप के बच्चे बेचैन होंगे और जिन्होंने रात-दिन मेहनत की, वो हमें गाली देंगें। महाशय, हमें ऐसे पाप का भागी मत बनाओ।

नेता—तुम बड़े भोले हो बेटा। अरे, हमारी सरकार बनेगी, सबको बिना परीक्षा ही उन्नत कर दिया जाएगा। तुम डरो नहीं, तुम्हारे पीछे हम रहेंगे। स्ट्राइक का आह्वान करो···।

(रघुबीर रणधीर को देखता है)

रणधीर—ना भाई, विद्या और विद्यार्थियों का नाम

बदनाम होगा। लोग हमें भी कलंकित करेंगे। इन नेताओं का क्या भरोसा। कल इनकी सरकार न बनी तो ?

नेता—शंतिया। न बनी, तो भी हम तुम्हारा वर्ष बर्बाद न होने देंगे। और तुम बदनामी से डरते हो ? आज के युग में ?

रघुबीर—अच्छा नेता जी, विचार कर लें।

नेता—विचार क्या, बस झण्डे उठाओ···अब अधिक समय नहीं है, आपको कोई कष्ट नहीं होगा। ये लो २५०००।—अब देर मत करो। मैं चलता हूँ, तुम घबराना नहीं। क्या-क्या नारे लगाने हैं, मैं बताऊँगा।

(पर्दा बन्द गिरता है)

"दूसरा दृश्य"

एक हॉल में ब्रह्माकुमारी आश्रम की ओर से प्रदर्शनी लगी हुई है, जिसका नाम है—"मानव उत्थान आध्यात्मिक प्रदर्शनी"। गेट पर बोर्ड लगा है—"गेट वे टु हैवन"। चारों ओर श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी नज़र आ रहे हैं। प्रथम चित्र आत्मा का है, दूसरा चित्र परमात्मा का, तीसरा योग का और चौथा युवाशक्ति का। सामने शिव-बाबा का ट्रान्सलाइट, चारों ओर सुनहरी किरणें बिखेर रहा है। बीच-बीच में सलोगन लगे हुए हैं। प्रथम सलोगन है—"कोई भी काम उतावलेपन सें न करो, उतावलेपन से किये गये हर काम के बाद पछताना पड़ता है"। दूसरा सलोगन है—"संहार नहीं, रचना करो"। तीसरा है—"अपनी शक्तियों का दुरुपयोग न करो।"

(कुछ शोरगुल की आवाज़ आ रही है···योगानन्द भागा-भागा आता है)

योगानन्द—निर्मला दीदी, आज विद्यार्थियों ने स्ट्राइक कर दी है। वे दुकानें लूटते, बसों को आग लगाते इधर ही आ रहे हैं। पुलिस उनका कुछ भी नहीं कर पा रही है। आप प्रदर्शनी बन्द कर दें और जल्दी सभी बहनें यहाँ से चलें।

निर्मला—योगानन्द भाई, घबराओ नहीं। हमारे साथ तो सर्व का रक्षक परमपिता है, जो सर्वशक्तिमान है। चिन्ता की कोई बात नहीं। धैर्य से काम लो।

योगानन्द—बहन जी, उन्होंने तो बड़ा ही भयानक संहार का दृश्य उपस्थित कर दिया है। सोचने का समय नहीं है। आज के विद्यार्थी को तो आप जानती ही हैं। अब जल्दी करो, देखो शोर नज़दीक आता सुनाई दे रहा है।

निर्मला—अच्छा, आप सभी अपने-अपने स्थान पर योग में बैठ जाओ। कोई भी विद्यार्थियों से बात न करें। वे जो भी करें, करने दें। शिव-बाबा तो हमारे साथ हैं ही। डर की कोई बात नहीं। सभी स्वस्थिति में शक्ति स्वरूप होकर बैठें।

(सभी योग-युक्त होकर बैठ जाते हैं। लाल प्रकाश जग रहा है।)

(विद्यार्थियों का झुण्ड नारे लगाता आ रहा है···आगे रघुबीर और रणधीर हैं। हाथों में झण्डे हैं।)

यह सरकार निकम्मी है।
यह सरकार बदलनी है॥

पुलिस साथ है, रोकने का प्रयास कर रही है, परन्तु विद्यार्थी बढ़ रहे हैं।

(लाल प्रकाश को देखकर)

रघुबीर—यह कैसा आडम्बर ? (हँसता है—इशारा करते हुए)—गेट वे टु हेवन···यहीं स्वर्ग है, बाकी सभी जगह नर्क है ! आह—हा—हा !! परन्तु शान्ति के प्रवाह मेंउसे झिझक हो रही है। (धीमे से)—घुसो सभी अन्दर! —तोड़ो, इनके ये चित्र ! न जाने कौन हैं ये ?

(सभी अन्दर घुसते हैं।)

सलोगन पढ़ रहे हैं—कोई भी काम उतावलेपन से न करो ! सभी के हाथ रुक जाते हैं। सभी की आवाज़ धीमी हो गई है। चित्र तोड़ना चाहते हैं, परन्तु साहस नहीं होता

रघुबीर—देख क्या रहे हो ?···डर गये हो क्या ?—तोड़ो जल्दी, आगे भी चलना है।

रणधीर—भाई, साहस नहीं होता, पता नहीं क्या शक्ति है।(सभी ब्रह्मा-वत्सों की ओर देखकर)—ये सभी कैसे शान्त बैठे हैं। इन्हें कुछ भी कहने का साहस नहीं होता। लगता है, हम कहीं देवियों के आश्रम में घुस आये हैं। देखो सभी कैसे एकटिक बैठे हैं ! क्या हैं ये···?

रघुबीर—लगता है कोई धर्म के प्रचारक हैं ?

रणधीर—इनसे पूछा तो जाए, ये कौन हैं और क्या कर रही हैं···?

रघुबीर—(निर्मला बहन को)—बहन जी आप कौन हैं ? यहाँ तो हमें कुछ निराला ही अनुभव हो रहा है।

निर्मला—हम हैं आपकी बहनें।

रघुबीर—(मन कुम्हला गया)—हमारी बहनें ?
कौन हैं देवी आप ?

हमें क्षमा करें, हम यहाँ घुस आये ! आप क्या कर रही हैं···?

निर्मला—आप हमारे भाई संहार कर रहे हैं और हम आपकी बहनें निर्माण।

रघुबीर—निर्माण ! कैसा निर्माण, बहन ?

निर्मला—भारत में रामराज्य लाने का निर्माण···और उसमें हमें आप-जैसे साहसी युवकों के सहयोग की आवश्यकता है।

रणधीर—बहन, संहार में भी हमारी आवश्यकता और निर्माण में भी ? स्पष्ट करो, बहन। शायद हम राह भूले हैं।

निर्मला—आओ हम आपको अपनी ये प्रदर्शनी समझाएँ।

(सभी दीदी के साथ जाते हैं)

निर्मला—(प्रथम चित्र)—इस चित्र में दिखाया गया है कि हम सभी देह नहीं, आत्मा हैं। आत्मा के ज्ञान से ही मनुष्य उत्थान कर सकता है। अपना व राष्ट्र का नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान कर सकता है। स्वयं को देह समझने से मनुष्य भौतिकता की ओर झुकता है, जो पतन का कारण है और देह समझने से अहंकार-वश मनुष्य अपनी बुद्धि व शक्ति का दुरुपयोग करता है। विवेक का दुरुपयोग करके वह पतन की ओर दौड़ता है।

(दूसरा चित्र)—ये हैं हम सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव···जो सभी को सुख-शान्ति का मार्ग दिखाते हैं। हम आत्माओं का सम्बन्ध हमारे सच्चे परमपिता से टूट चुका है, इसीलिए हम पथ भ्रष्ट हुए हैं। परमात्मा ज्योति स्वरूप और अशरीरी हैं। वह इस समय आकर ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दे रहे हैं और भारत को पुनः स्वर्ग बना रहे हैं। उनकी श्रीं मत ही कल्याणकारी है।

(तीसरा चित्र)—इसमें दिखाया है "राजयोग"। राज-के अभ्यास से आत्मा पावन व शक्तिशाली बन जाती है। मनुष्य का विवेक स्पष्ट हो जाता है और निर्णय शक्ति बढ़ती है। राजयोग के द्वारा मनुष्य मनोविकारों पर विजय प्राप्त कर सकता है। परमात्मा के समीप पहुँचने का यही एक सर्वश्रेष्ठ साधन है।

(चौथा चित्र)—इसमें दर्शाया है कि बरसात का पानी यदि यों ही बहता रहता है, तो बाढ़ आ जाती है और विनाश का दृश्य उपस्थित हो जाता है; परन्तु यदि उस पानी पर बाँध बाँध दिया जाता है, तो उससे ही कई स्वनात्मक कार्य होते हैं, बिजली पैदा होती है, नदियाँ निकलती हैं और चारों ओर हरियाली छा जाती है।

इसी प्रकार युवकों की शक्ति, जिसका प्रयोग आज संहार के लिए किया जाता है, अगर उन्हें सही मार्ग प्रदर्शना दी जाए, तो उनकी शक्ति का प्रयोग देश के नव-निर्माण में किया जा सकता है।

रघुबीर—ये तो आपने हमारी ही बात कह दी।

निर्मला—हाँ, भैया ! आप युवकों में असीम बल है, असीम साहस है। अगर आप उसका सदुपयोग करें, तो आप देश की सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं। जन-जीवन सुखी व सम्पन्न हो सकता है।

देखिये, हमारे पास भी ये नवयुवक हैं, जिन्हें स्वयं परमात्मा से मार्ग प्रदर्शना मिली है। और ये, भारत को स्वर्ग बनाने में अपने तन, मन, धन का प्रयोग कर रहे हैं।

रघुबीर—सभी विद्यार्थियों की ओर विस्मय से देखता है।

(सभी विद्यार्थी)—ठीक कहती हैं बहन जी ! हम आज किस काम में लग गये ! यहाँ आकर हम आत्मग्लानि-सी महसूस कर रहे हैं।

रघुबीर—तो अब हमें क्या करना है? संहार या निर्माण ?

रणधीर—निर्माण करेंगे और संहार के लिए प्रायश्चित्त।

रघुबीर—तो हम क्या करें रणधीर भाई ?

रणधीर—स्ट्राइक समाप्त कर दें और इन बहनों से ज्ञान-योग सीखकर निर्माण के कार्य में लग जाएँ।

रघुबीर—बहन जी, हमें आज्ञा दो। हम यह कुकृत्य बन्द कर दें और यहाँ आकर ज्ञान-योग सीखें। क्या आप हमें आने देंगी ?

निर्मला—क्यों नहीं, आप हमारे ही भाई हैं। आप निश्चिन्त होकर आइये।

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आपका स्वागत है। आप किसी के भी कहने से उल्टे कार्य में न लगें। हम आपको परमात्मा द्वारा सुनाई गई—इस सृष्टि को स्वर्ग बनाने की अलौकिक योजना" सुनायेंगी। अभी आप सभी परीक्षाएँ दें।

रघुबीर—(हाथ जोड़ते हुए) आप हमारी धर्म की

बहन हैं। आपने हमें सच्ची मार्ग-प्रदर्शना दी। आप जैसी देवियाँ ही युवकों को गाइड कर सकती हैं। हम आपका एहसान जीवन भर नहीं भूलेंगे।

अब हमें आज्ञा दें। हम कल परीक्षा में सम्मिलित होंगे।

सभी का प्रस्थान
(पर्दा गिरता है)

"तीसरा दृश्य"

सभी सरकारी उच्च अधिकारियों की मीटिंग हो रही हैं। सभी चिन्तित हैं।

जिलाधीश—क्यों एस० पी० साहब, आपकी पुलिस विद्यार्थियों को रोकने में असमर्थ रही?

एस० पी०—पुलिस क्या करे? गोली चलाए, तो भी उन्हीं के बच्चे हैं। काफ़ी नुकसान किया है विद्यार्थियों ने। पता नहीं, अभी क्या स्थिति है? काफ़ी तोड़-फोड़ की है। ये नेता लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए अनर्थ करा देते हैं।

जिलाधीश—अब क्या योजना है?

एस० पी०—बस कर्फ्यू लगा दिया जाए। अगर स्थिति कन्ट्रोल में न रही तो सेना की मदद लेनी पड़ेगी।

जिलाधीश—मैंने सभी सूचना मुख्य मंत्री को दे दी है। अभी फोन आया था कि इस स्ट्राइक के पीछे कौन है—उसका पता लगाकर उसे एरैस्ट कर लो।

एस० पी०—ये ही नेता होंगे और कौन होंगे। सी० आई० डी० भेजें।

शिक्षा निर्देशक—कल से परीक्षा है। सारी व्यवस्था चौपट हो गई। हमारी तो शान्ति ही भंग हो गई।

प्रधानाध्यापक—उन्होंने तो कॉलेजों में भी काफी तोड़-फोड़ की। सारा वर्ष बड़ी ही शान्ति से बीता। इस बार सुन्दर परिणाम की कल्पना थी। सब आशाएँ मिट्टी में मिल गई।

पुलिस इन्सपेक्टर का प्रवेश—सभी को सेल्यूट करते हुए आगे बढ़े।

पुलिस इन्सपेक्टर—मैं खुशी का संदेश लाया हूँ।

एस० पी०—वह क्या? जल्दी बोलो। हमें तुम पर विश्वास था कि तुम सफल होकर आओगे। कितनी ही देर से कोई सन्देश नहीं मिला। बोलो क्या बात है?

इन्सपेक्टर—सर गज़ब हो गया।

एस० पी०—खुशी में फूले जा रहे हो। बोलो तो सही।

इन्सपेक्टर—विद्यार्थियों ने स्ट्राइक वापिस ले ली और सभी शान्ति से वापिस चले गये।

एस० पी०—क्या विद्यार्थियों ने पुलिस से हार मान ली या जनता का कुछ सहयोग मिला?

इन्सपेक्टर—नहीं साहब, चमत्कार हुआ एक आध्यात्मिक शक्ति का। जिन्हें हम भी आज तक नहीं जानते थे।

एस० पी०—स्पष्ट तो करो···।

इन्सपेक्टर—सर, चलते-चलते वे एक ऐसे स्थान पर पहुँच गये, जहाँ ब्रह्माकुमारियों ने एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई थी। वहाँ उनका हृदय-परिवर्तन हो गया।

एस० पी०—क्या हुआ वहाँ? वही लड़कियां जो सफ़ेद कपड़े पहनती हैं? कहते हैं वो जादूगरनी हैं। उनका जादू इतना श्रेष्ठ कार्य कर गया···?

इन्सपेक्टर—सचमुच साहब, उनके पास कोई शक्ति है। उनके वहाँ इतना शक्तिशाली वातावरण था कि लड़कों की आवाज़ें भी धीमी पड़ गईं; उनकी हिंसात्मक वृत्ति बदल गई। बड़ा ही आकर्षक था वह दृश्य।

एस० पी०—तो कैसे हुआ वहाँ?

इन्सपेक्टर—सरकार, लड़कों ने उनके चित्र तोड़ने की कोशिश की। परन्तु न जाने कौन सी भगवान की शक्ति थी; वे कुछ भी न कर सके। सभी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ शान्त बैठे थे। फिर लड़के उन देवियों के आगे झुक गये और क्षमा-याचना करने लगे।

एस० पी०—इतने तक बात हो गई। सुना है कि उनकी आँखों में जादू है।

इन्सपेक्टर—साहब फिर बहनों ने उन्हें चित्रों पर व्याख्या दी। वहाँ एक चित्र युवाशक्ति पर बना था। उसकी व्याख्या ने उनका मनोपरिवर्तन कर दिया और वो वापिस हो लिए। कहते थे हम इन बहनों से योग सीखेंगे। वहाँ से जाकर उन्होंने मीटिंग की और यह लिखित में सब-कुछ दिया है। (कागज़ देता है) विद्यार्थी परीक्षा में भी शामिल होंगे।

जिलाधीश—आश्चर्य है!

इन्सपेक्टर—साहब, वो दृश्य मुझसे भी नहीं भूलता। ऐसा लगता था कि वे नारियाँ नहीं थीं, बल्कि अम्बा, दुर्गा व सरस्वती साक्षात् अवतरित हुई थीं।

शिक्षा निर्देशक—तो क्यों न इन ब्रह्माकुमारियों को

परीक्षाओं के बाद ही कॉलेज में निमन्त्रण दिया जाए और बच्चों को कुछ नैतिक शिक्षा दी जाए ?

प्रधानाध्यापक—हाँ, अवश्य, हम लोगों की बातें तो ये विद्यार्थी मानते भी नहीं। इन देवियों की बातें अवश्य ही सत्कार से सुनेंगे।

निर्देशक—तो आप लिखित में एक निमन्त्रण इन बहनों को भेज दें।

प्रधानाध्यापक—अवश्य, आज ही लीजिये। क्या परीक्षा होगी ?

इन्सपेक्टर—हाँ, विद्यार्थी नेताओं ने उन बहनों से परीक्षा देने की प्रतिज्ञा की थी। वो परीक्षा में अवश्य ही आयेंगे। आप व्यवस्था कर लेना।

निर्देशक—बहुत अच्छा हुआ ! भगवान ने हमारी मदद की···।

(सभी का उठना···।)

(पर्दा गिरता है)

"चौथा दृश्य"

कॉलेज का बड़ा हॉल। दीवारों पर कुछ प्रसिद्ध नेताओं के चित्र लगे हुए हैं। सभी विद्यार्थी हॉल में शान्ति से बैठे हुए हैं। स्टेज सजी है। प्रधानाध्यापक शिक्षा निर्देशक, रणधीर व रघुबीर मंच सचिव हैं।

ब्रह्माकुमारी शान्ति, ब्रह्माकुमारी निर्मला और ब्रह्माकुमार सन्तोष का आगमन—श्वेत वस्त्र हैं। चेहरों पर दिव्यता है। सुनहरा चमकता बैज उनकी आध्यात्मिकता में चार चाँद लगा रहा है।

रघुबीर—(दोनों को गुलदस्ता भेंट करते हुए)—हम सभी विद्यार्थियों की ओर से आपका स्वागत है।

(रणधीर सिंह दोनों को मंच पर बैठाते हैं)

रणधीर—ये ही वो देवियाँ हैं, जिन्होंने हमारा मनोपरिवर्तन किया था। ये न होतीं, तो हम न जाने क्या-क्या अनर्थ कर डालते। हम इनके आभारी हैं। इनके मुखारविन्द से कुछ सुनने के पूर्व हम अपने अध्यापक वर्ग से कुछ आशीर्वाद के बोल सुनना चाहेंगे।

शिक्षा निर्देशक—मैं कल ही इनके आश्रम पर गया था। ये देवियाँ बहुत ही श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं। मानो इस कलियुगी अन्धकार में सूर्य उदय हुआ हो। मैंने महसूस किया कि ये देवियाँ ही मानव समाज को कुछ दे सकती हैं। इनमें न ईर्ष्या है, न द्वेष, सच्ची समाज सेवा कर रही हैं ये।

प्रधानाध्यापक—आज देश के उत्थान के लिए आध्यात्मिक शक्ति की ही आवश्यकता है। मानव का पतन देखकर आँखें मूँदनी पड़ती हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश में ये शक्तियाँ अवतरित हुई हैं। इनकी पवित्रता के कारण ही हम जीवित हैं। हम इनका सत्कार करते हैं और इनसे प्रार्थना करते हैं कि ये हमें कुछ प्रकाश की किरणें दें।

रणधीर—अब हम आज की हमारी मुख्य अतिथि, दीदी निर्मला जी, के मधुर, शान्ति देने वाले बोल सुनेंगे।

ब्रह्माकुमारी निर्मला—परमपिता परमात्मा की सन्तानो, मेरे अलौकिक भाइयो ! आत्माओं !

इस समय परमात्मा ने विश्व के उत्थान का सत्य मार्ग दिखाया है। केवल पवित्रता और राजयोग के बल से ही हम राष्ट्र के डूबते स्वमान को उबार सकते हैं।

आप युवकों में नव-चेतना है, नव-रक्त है। आप देश के उत्थान में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आप स्वयं की शक्तियों को पहचानें और उसका सदुपयोग करना सीखें···। केवल बाहुबल मात्र से ही राष्ट्र का नव-निर्माण नहीं किया जा सकता···। हमें कुछ आध्यात्मिक शक्तियों की भी आवश्यकता पड़ती है।

मैं सभी विद्यार्थियों से एक बात पूछना चाहती हूँ कि क्या आप सभी देश प्रेमी हैं ?

सभी विद्यार्थी—हाँ।

निर्मला—क्या आप देश की रक्षा के लिए कुछ बलिदान दे सकेंगे—?

विद्यार्थी—हम जीवन का भी बलिदान देने को तैयार हैं।

निर्मला—तो मुझे आप में से ऐसे युवक चाहिए, जो देश की रक्षा के लिए आज से १० वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य को अपना सकें—क्योंकि केवल पवित्रता के बल से ही हम भारत में रामराज्य ला सकेंगे। महात्मा गाँधी ने भी राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के लिए ब्रह्मचर्य का ही पाठ सिखाया था।

(चारों ओर सन्नाटा छा जाता है)

निर्मला—घबराओ नहीं, हम आपको इसकी सरल विधि बतायेंगे। आपके मन में कोई तनाव नहीं होगा, मन निर्मल हो जाएगा। आपको न पढ़ाई छोड़नी होगी न माता-पिता। हमें देश में आध्यात्मिक क्रान्ति लानी है और आपके सहयोग की आवश्यकता है। आप डरें नहीं, साहस से हाथ उठायें···।

(रघुबीर व रणधीर सहित २० विद्यार्थी हाथ उठाते हैं।)

निर्मला—शाबास। मेरे साहसी भाइयो। आज मुझे आप साहसी भाइयों के बीच आकर हर्ष हुआ।

और जिन्होंने हाथ उठाये, वो यदि ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सेवा-केन्द्र पर आयेंगे, तो हम उन्हें तीन दिन का योग शिविर करायेंगी और देश के नव-निर्माण की भावी योजना देंगी···।

रणधीर—अब ब्रह्माकुमार सन्तोष जी "आह्वान" नामक एक कविता सुनायेंगे।

सन्तोष—

"युवकों का आह्वान"

उठो जवानो भारत के, भारत में क्रान्ति लानी है,
धूमिल भारत के मस्तक पर, गौरव की किरण जगानी है।
आज तुम्हारी क्रान्ति ही, भारत के प्राण बचायेगी,
भारत में एक बार, मानवता शीश उठायेगी
मानव का आदर्श बनो, तुमको ही सीख सिखानी है।
उठो जवानो भारत के, भारत में क्रान्ति लानी है।
युवकों का पावन मन ही, भारत की लाज बचायेगा।
दुष्कलंक जो माँ के सिर पर, उनको आज मिटायेगा,
सुचरित्र की रक्षा कर, भारत की शान बढ़ानी है,
उठो जवानो भारत के, भारत में क्रान्ति लानी है।
शूरवीर तुम भारत के, रावण की गुलामी मिटाओ तुम,
देव फँसे हैं असुर-जेल में, उनको आज छुड़ाओ तुम,
उठो पुनः तुम कदम मिलाओ हर जन को एकता सिखानी है,
उठो जवानो भारत के, भारत में क्रान्ति लानी है।
तोड़ो बन्धन विकृत समाज के, जग बन्धन मुक्त बनाना है,
दुनिया की उलझन से उठकर, मर्यादा सिखलानी है,
चिन्ता छोड़ो अपने तन की, जन-जन की प्यास मिटानी है,
उठो जवानो भारत के, भारत में क्रान्ति लानी है।

रणधीर—अच्छा, आज का कार्यक्रम समाप्त होता है। हम सभी कल से ही ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में योग सीखने जायेंगे।

(पर्दा गिरता है)

"पाँचवाँ दृश्य"

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का योग कक्ष। २० विद्यार्थियों का ३ दिन का योग शिविर समाप्त हुआ। रघुबीर सिंह व रणधीर सिंह आगे बैठे हैं। सभी ने श्वेत वस्त्र धारण किये हैं। सभी के चेहरों से कान्ति व शान्ति झलक रही है।

निर्मला—आप सभी का ३ दिन का, योग शिविर समाप्त हुआ। अब बोलो, आप में से कौन-कौन पवित्र और योग-युक्त बनना चाहते हैं?

(सभी हाथ उठाते हैं)

रघुबीर—दीदी जी, हमने महसूस किया कि जब तक हमने अपना जीवन श्रेष्ठ नहीं बनाया है, हम दूसरों को भी श्रेष्ठता नहीं सिखा सकते।

रणधीर—मैंने गहराई से जाना कि केवल पवित्रता व योग की शक्ति द्वारा ही मानव-मन को स्वच्छ किया जा सकता है। और तब ही रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है।

अन्य विद्यार्थी—बहन जी, हमने जाना कि केवल भाषणों से कुछ भी नहीं किया जा सकता, ईश्वरीय शक्ति का साथ होना आवश्यक है।

निर्मला—हमने आपको यह भी सत्यता बताई कि सृष्टि पर रामराज्य लाना किसी मानवीय शक्ति का काम नहीं। केवल सरकार बदलने से कुछ नहीं होगा। क्या नई सरकार के मंत्री दिव्य पुरुष होंगे? परमात्मा शिव पुनः इस सृष्टि को स्वर्ग बना रहे हैं और सबको उनकी आज्ञा है कि पवित्र बनो तथा योगी बनो। उनकी इस गुप्त क्रान्ति में सहयोगी बनना ही हमारा परम कर्त्तव्य है।

विद्यार्थी—हम अवश्य ही सहयोगी बनेंगे।

निर्मला—अब आप जाओ और सभी को बताओ कि स्वर्ग पर स्वर्ग उतारने के लिए 'पवित्र बनो और योगी बनो'। यह परमात्मा का नारा सारे देश में गुँजा दो। इस क्रान्ति को लाओ, तब ही विश्व में शान्ति होगी।

ये १० सूत्री कार्यक्रम लेकर आप सारे देश में जाओ और सभी मनुष्यों से बुराइयों का दान लो और उन्हें सद्-गुणों के हार पहनाओ। आप देश में ऐसी आवाज फैलाओ कि जन-जन के मन पर रामराज्य लाने का संकल्प हो।

रघुबीर—अवश्य, बहन जी। हम परमात्मा की आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। हम देश में शिव का झण्डा लहरायेंगे और आध्यात्मिक क्रान्ति लायेंगे। आप हमें आशीर्वाद दें।

निर्मला—जाओ, शिव-बाबा की याद में, सफलता तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। परमात्मा तुम्हारे साथ हैं, तुम्हें कोई भी नहीं रोक सकेगा।

(पर्दा गिरता है)

रक्षाबन्धन का वास्तविक रहस्य

रक्षा बन्धन के त्योहार के बारे में अधिकतर लोगों की यही मान्यता चली आती है कि यह त्योहार भाई द्वारा बहन की रक्षा का संकल्प लेने का प्रतीक है। साथ-साथ यह भी कहा जाता है कि यह त्योहार हमारे देश में चिरकाल से मनाया जाता रहा है। यदि ये दोनों बातें मान ली जायें, तो निम्नलिखित प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं।

क्या तब राजा का शासन कमज़ोर था ?

१. यदि हमारे देश में हर बहन अपने हर भाई को हर वर्ष रक्षा सूत्र बाँधती थी, तो क्या हमारे देश में अपराध इतना बढ़ा हुआ था कि हर कन्या, माता, बहन को भय बना रहता था और वह अपनी लाज को ख़तरे में महसूस करती थी ? इतिहास तो यह बताता है कि यहाँ चोरी-चकारी भी नहीं होती थी, बल्कि घरों के दरवाज़े खुले रहते थे। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि राजा के गुप्तचर वेश बदल कर पता लगाते थे कि किसी पर अत्याचार तो नहीं हो रहा, कोई दुखी तो नहीं और कोई अपनी जान व माल को ख़तरे में तो महसूस नहीं करता ? यहाँ तक कहा जाता है कि राजा स्वयं भी वेश बदलकर अपनी प्रजा की हालत का पता लगाता था। तब राजा का मुख्य कर्त्तव्य ही अपने प्रदेश को बाहर के आक्रमणों से और अपने राज्य के भीतर के कुछ इने-गिने अपराधी लोगों से रक्षित करना होता था। ऐसी स्थिति में रक्षा की समस्या का ऐसा विकराल रूप तो रहा ही नहीं होगा कि हर बहन हर भाई को हर वर्ष राखी बाँधे ?

क्या प्राचीन काल में उपनगरों में ऐसे अपराध होते होंगे ?

फिर उस काल के भारत में कोई इतने बड़े-बड़े महानगर (Metropolitan Cities) तो होते नहीं थे, जैसे कि आज दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई या अन्य ऐसे शहर। तब तो भारत आज की अपेक्षा भी अधिक कृषि प्रधान ही देश था जिसमें अधिकतर ग्रामों, उपनगरों या छोटे-छोटे नगरों में ही लोग बसे हुए थे और उनमें मेल-जोल और लेन-देन ऐसा होता था जैसा कि एक बड़े परिवार के सदस्यों में होता है। तब लोग अपने ग्राम के लोगों से प्रायः परिचित होते थे और वे मर्यादा तथा नैतिकता पर भी ध्यान देते थे। तब ऐसी स्थिति में अपहरण, छेड़-छाड़ या लाज लूटने की वारदातें भला कैसे हो सकती थीं ? तब तो हर व्यक्ति अपने गाँव की बहन को, दूसरे गाँव में चले जाने पर भी, सदा 'अपने गाँव की बहन' मानकर एक भ्रातृवत् स्नेह की दृष्टि से व्यवहार करता था। ऐसी व्यवस्था में और ऐसे वातावरण में भला अपने मान की रक्षा को एक समस्या मानकर अपने भाई को राखी बाँधने का प्रश्न ही कैसे उठ सकता था ?

नामकरण, मुण्डन, उपनयन आदि संस्कारों की तरह इसकी आयु निश्चित क्यों नहीं ?

हमारे देश में बहुत-से 'संस्कार' और धार्मिक रीति-रिवाज़ ऐसे हैं, जो कि एक विशेष आयु आने पर किये जाते हैं। अतः यदि लाज की रक्षा का प्रश्न रक्षा बन्धन त्योहार से जुड़ा होता, तो कन्या का एक विशेष आयु प्राप्त करने के बाद और विवाह से पहले ही रक्षा बन्धन मनाने की रस्म प्रचलित होती। तीन वर्ष की कन्या, जिसकी लाज की रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता, द्वारा अपने २ वर्ष की आयु के भाई को, जो कि रक्षा करने में बिल्कुल अक्षम हैं इस दृष्टिकोण से राखी बाँधने का क्या प्रयोजन ?

क्या क्षत्रिय रक्षा नहीं करते थे ?

हमारे देश के बारे में तो यह कहा जाता है कि यहाँ रक्षा करने का कर्त्तव्य क्षत्रियों का था। यदि किसी पर अत्याचार होता या कोई दुराचार पर ही उतर आता, तो क्षत्रिय लोग दुराचार का अन्त करने के लिए अपनी जान तक की बाज़ी लगा देते। आततायियों का सामना करना वे अपना धर्म मानते। तब क्या ऐसा माना जाये कि देश में शताब्दियों से ऐसे

क्षत्रिय ही नहीं रहे थे कि जो माताओं-बहनों की रक्षा के लिए अपने क्षात्र-बल का प्रयोग करते और अपने 'धर्म' का पालन करते ! बहनों द्वारा भाइयों को राखी बाँधने का अप्रत्यक्ष अर्थ तो यही निकलता है कि न क्षत्रिय, न राजा, न राजा का आरक्षक दल (Police Force) ही रक्षा करते थे और न देश में कोई नैतिकता ही रही थी कि मातायें-बहनें अपनी लाज को सुरक्षित समझतीं। ये सब मानना तो गोया ज्ञात और अज्ञात इतिहास के बिल्कुल विरुद्ध बात करना और अपने देश, अपने धर्म और अपने प्राचीन समाज की मिथ्या ग्लानि करना और सत्यता के बिल्कुल विपरीत जाना है, क्योंकि वास्तव में भारत में युग-युगान्तर से नैतिकता और मर्यादा का वातावरण रहा है। हाँ, कुछ ही शताब्दियाँ पहले से इसका वातावरण बिगड़ा है, परन्तु यह त्योहार तो (जैसे कि लोग कहते भी हैं) चिरातीत से चला आ रहा है।

क्या यहाँ लोग अपहरण आदि होने देते थे ?

भारत के लोग स्वयं भी कहते हैं कि भारत देवभूमि था। यहाँ पर ऐसे-ऐसे आख्यान घर-घर में पढ़े जाते हैं, जिनमें यह बताया गया है कि एक नारी के चुराये जाने पर चुराने वाले की सारी सत्ता ध्वस्त कर दी गई। ऐसी स्थिति में यह सोचना कि अपनी लाज की रक्षा के लिए ही बहन भाई को हर वर्ष राखी बाँधती थी। गले के नीचे नहीं उतरता। क्या यह कहना गलत है कि तब नारी की लाज सुरक्षित थी।

भाई कभी भी रक्षा का संकल्प व्यक्त क्यों नहीं करता ?

सोचने की बात यह भी है कि यदि बहन भाई को अपनी लाज अथवा अपनी शारीरिक रक्षा के लिए राखी बाँधती है, तो भाई को कुछ दो शब्द तो इसके उत्तर में कहने ही चाहिए। वह कम-से-कम इतना तो कह दे कि—"बहन, मैं आज यह दृढ़ संकल्प लेता हूँ कि जब तक जान में जान रहेगी, तब तक तेरी आन रहेगी।" अच्छा न भी कहे, तो उसके चेहरे से ही कम से कम ऐसा भाव प्रगट हो या कोई भाई भी अपना ऐसा अनुभव बता दे कि "जब मुझे राखी बाँधी जा रही थी, तो मेरे मन में सुरक्षा और वीरता के भाव ठाठें मार रहे थे !" परन्तु जबकि कोई ऐसी स्थिति ही सामने नहीं होती, एक माहौल ही ऐसा नहीं होता, तो दोनों के मन में कोई रक्षक और रक्षिता के भाव ही नहीं उठते, बल्कि वे तो एक पवित्र स्नेह, एक शुद्ध सम्बन्ध के नाते से मिलते हैं। और बहन की रक्षा करना तो भाई का वैसे भी कर्त्तव्य ही है; इसके लिए उसे राखी बाँधने की क्या आवश्यकता है और हर वर्ष जतलाने, याद दिलाने और फ़रियाद करने की क्या आवश्यकता है ? क्या बहन को भाई के स्नेह और उसके मन में रक्षा की भावना में संदेह है कि हर वर्ष उसे इसके लिए राखी बाँधी जाती है ? नहीं, नहीं क्या इससे यह प्रतीत नहीं होता कि इसके पीछे भाव कुछ और ही है।

बहन के अतिरिक्त ब्राह्मण राखी क्यों बान्धते हैं ?

फिर, हम यह भी देखते हैं कि बहन के अतिरिक्त ब्राह्मण भी यजमान को राखी बाँधते हैं और बाँधते हुए उसे वे यह कहते हैं कि—"इन्द्राणी ने भी इन्द्र को राखी बाँधी थी और उससे इन्द्र को विजय प्राप्त हुई थी।" पुनश्च कुछ लोग इस पर्व को विषतोड़क पर्व भी कहते हैं। अतः यदि यह त्योहार भाई द्वारा बहन की रक्षा के संकल्प का ही प्रतीक होता, तो आज तक ब्राह्मणों द्वारा राखी बाँधने का रिवाज न चला आता ? इससे तो यह विदित होता है कि यह त्योहार बहनों को भी ब्राह्मणों का दर्जा देकर और भाई को यजमान की तरह से राखी बाँधने का प्रतीक है, क्योंकि दोनों द्वारा राखी बंधाये जाने की रीति भी समान ही है।

रक्षा बन्धन का वास्तविक महत्त्व

यदि ऊपर बताई गई बातों को ध्यान में रखते हुए विचार किया जाए, तो मानना होगा कि यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है, अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। पुनश्च, यह ऐसे समय की याद दिलाता है, जब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं-माताओं को ब्राह्मण पद पर आसीन किया, उन्हें ज्ञान का

कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया, जिसके फल-स्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हो। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्मा-कुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बाँधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की राखी बाँधती है।

आओ इसमें आहुति डालें

ब्र० कु० राजकुमारी नागपाल, शालीमार बाग, देहली

कल्प वृक्ष के जो गुच्चे,
आज हमसे औ तुमसे,
इधर-उधर बिखर गये थे,
उन्हें ढूंढ़ लाने को उग्र।
रचा विश्वकल्याण महायग।। (यज्ञ)
हम भी इसमें पुण्य कमा लें।
आओ इसमें आहुति डालें।।

न इसमें है कोई कुँड,
न मंत्र पढ़ता ब्राह्मण झुँड,
न पड़ रही इसमें स्थूल समग्री,
पर बनाए यह सम्राट साम्राज्ञी,
इसकी ऋचाएँ अनोखी,
जाने कहाँ यह मतवाला जग?
रचा है विश्व कल्याण महायग,
इससे अपना जीवन सफल बना लें।
आओ इसमें आहुति डालें।

दस सूत्र इसकी समिधा,
न कोई कठिन इसमें विधा,
बुद्धि रूपी कुँड आहा,
विकारों की सामग्री स्वाहा,
सुगन्ध योग की चहुँ ओर,
महके इससे भविष्य मग।
रचा विश्व कल्याण महायग।।
आप भी इस सुगन्ध को पालें।
आओ इसमें आहुति डालें।।

एक अवगुण डाल दो इसमें,
एक दिव्य गुण निकाल लो इससे,
तंग करते जो तुम्हें,
उन संस्कारों को करना भस्म।
रचा है विश्व कल्याण महायग।
क्यों पीछे खड़े हो खोलो ताले।
आओ इसमें आहुति डालें।।

तेरा इसमें पड़ा जो दस पैसे का सिक्का,
स्वर्ण कोष भी है इसके समक्ष फिक्का,
तेरी शुद्ध भावनाओं की लपटें,
प्रकाश फैलाएं बनाएं प्रज्ञ,
रचा है विश्व कल्याण महायज्ञ,
छोड़ संकोच आगे कदम बढ़ा लें।
आओ इसमें आहुति डालें।।

इस चित्र में सोलन में आयोजित प्रदर्शनी उद्घाटन वहाँ के एस० डी० ओ० भ्राता कुमार जी टेप काटकर कर रहे हैं तथा उनके इ वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

ऊपर के चित्र में श्री गंगानगर में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहाँ चर्म उद्योगपति भ्राता रामदेव अपनी राय लिख रहे हैं।

यह चित्र कलकत्ता (रायबगान) सेवा केन्द्र द्वारा शहर के प्रमुख भाग से निकाली गई शोभा यात्रा का है।

यह चित्र तेजपुर की कृष्णा एण्ड कम्पनी में आयोजित कार्यक्रम का है। वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ ब्र० कु० नीलम व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र भरुच सेवा केन्द्र द्वारा हरिजन बस्ती में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। वहाँ के एडवोकेट भ्राता धीरजलाल परमार मोमबत्ती जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र चण्डीगढ़ सेवा केन्द्र द्वारा कुष्ठ रोगियों छड़े वर्ग के लोगों के लाभार्थ आयोजित कार्यक्रम के अवसर का है। इस अवसर पर ई गई राजयोग फिल्म को हजारों लोग बड़े न से सुन रहे हैं।

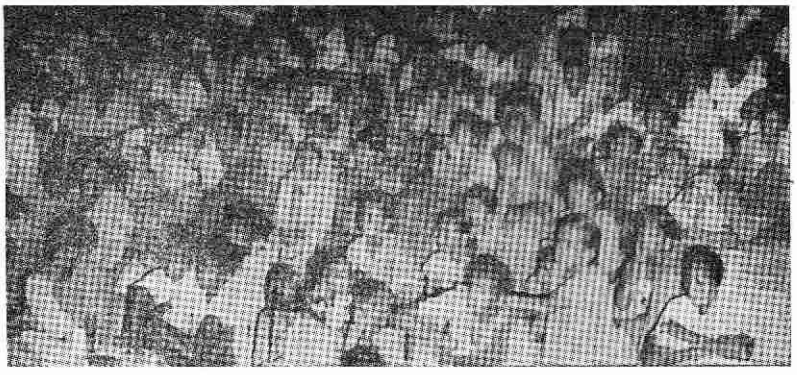

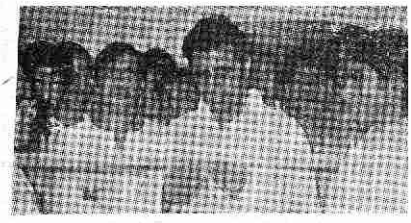

चित्र सिरसा सेवा केन्द्र द्वारा कालावाली मण्डी में आयोजित प्रदर्शनी का है। जैन सभा के प्रधान भ्राता राम जैन टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

↑ यह चित्र मुरादाबाद सेवा-केन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ के प्रमुख व्यक्ति टेप काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र रोपड़ सेवा-केन्द्र की ओर से गुरुनानक कुष्ठ आश्रम के सामने स्थित शिव मन्दिर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। बहिन विद्या जी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० राजकुमारी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं। ↓

यह चित्र कश्मीरीगेट (दिल्ली) सेवा-केन्द्र द्वारा अपंगों के लाभार्थ अयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। चित्र में ब्र० कु० मीरा एक अपंग व्यक्ति को समझा रही हैं साथ में ब्र० कु० लीला जी खड़ी हैं।

विश्व कल्याण महायज्ञ के दस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत वाराणसी में हुई ईश्वरीय सेवा का समाचार

राजघाट अपंग-अपाहिजों की कालोनी में ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवचन

वाराणसी में गंगा के किनारे राजघाट के पास एक बस्ती है, जिसमें अधिकांश अपंग, अपाहिज एवं निर्णाश्रत लोग रहते हैं। ये लोग अपना जीविकोपार्जन भिक्षा मांगकर करते हैं और अधिकतर रोगी, कोढ़ी, लंगड़े, लूले अन्धे, गूंगे, छोटी-छोटी झुग्गियाँ बनाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

दिनांक १ जून, ८० को वहाँ प्रातः ८ से १० बजे तक ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन का कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। इन लोगों ने कभी ऐसा सोचा भी नहीं होगा कि उनके जीवन में कोई समय ऐसा भी आयेगा कि उन्हें उनके ही स्थान पर घर बैठे धवल वस्त्रधारी होली हंसों का जोड़ा (दो ब्रह्माकुमारी बहनें) उनको बड़े स्नेह से बहुत सरल और सुन्दर भाषा में उन्हें ज्ञान की मीठी-मीठी लोरी देकर उनके निराश एवं अंधकारमय जीवन में एक आशा की किरण, उनके हृदय में जगा देगी और वे भी बाप के सान्निध्य का अनुभव कर सकेंगे, सो ऐसा ही हुआ। सभी बेचारे उत्सुकता से देख रहे थे और ज्ञान-अमृत पा रहे थे। प्रोग्राम का प्रारम्भ बाबा की ३ मिनट की याद के बाद कराया गया। स्पष्ट दिखाई देता था कि टेप के गीत से वे कितने भाव-विभोर हो रहे थे। बहनों ने उनको 'स्व' की स्मृत दिलाते हुए कर्म, अकर्म, निष्कर्ष की सरल व्याख्या करते हुए बुरे कर्मों से बचने और श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दी। किन कर्मों के फल से मनुष्यात्माओं को इस प्रकार का दुःख देखना पड़ता है और उन दुखों से छुटकारा पाने के लिए श्रेष्ठ कर्म तथा बाप की स्मृति को कैसे अपनाएँ उनको चित्रों के माध्यम से बाबा का परिचय भी समझाया। अन्त में कोई-न-कोई एक विकार अथवा बुराई को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई अथवा दान लिया, चूंकि यह पहला कार्यक्रम था, अस्तु उन्हें टोली भी बाँटी गई। उनकी इस सेवा को करते देख बहुत से चलते-फिरते नागरिक भी इकट्ठे हो गए थे जिसका उन पर भी एक अच्छा प्रभाव पड़ा।

उत्तर प्रदेश राजकीय भिक्षु कार्यशाला में ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवचन एवं प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश भिक्षा-वृत्ति उन्मूलन अधिनियम की धारा ९ के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा संचालित भिक्षु-गृह, चौकाघार में लगभग इस समय २०० भिक्षुओं की पालना तथा भिन्न-भिन्न प्रकार हैन्डीक्राफ्ट्स का सिखाना (जिससे कि वह १, २ वर्ष बाद निकल कर खड़े हो सकें) चलता है। इन सभी को खाना, कपड़ा रहने का स्थान सरकार द्वारा दिया जाता है। इस कर्मशाला अथवा कारागार में वे ही भिक्षु रहते हैं, जिनको पुलिस मन्दिरों या घाट के आस पास भिक्षा मांगते देखते अधिनियम के अन्तर्गत पकड़ कर ले आती है। हम लोगों ने समाज कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश के उप निर्देशक से मिलकर के उनसे कार्यक्रम करने की अनुमति ली उन्होंने अधीक्षक के नाम सरकुलर इश्यु करके प्रोग्राम करने के लिए व्यवस्था करने हेतु आदेश दिया। तथास्तु १२ जून को सायं-काल ६ बजे से ८ बजे तक वहाँ पर कार्यक्रम रहा। भिक्षु कर्मशाला की सारी व्यवस्था बहुत ही सुन्दर थी। ब्रह्माकुमारी बहनों के अलावा क्लास के कई भाई बहन पहले से ही वहां पहुँच गये थे। वहाँ के कार्यक्रम में २०० भिक्षुओं के अलावा, कर्मशाला के अधिकारीगणों के अतिरिक्त वहाँ की बस्ती के बहुत स्त्री मातायें व नागरिक उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में प्रारम्भ में ३ मिनट प्रभु की स्मृति में बिठाकर, टेप के गीत बजा

कर ईश्वरीय विश्व वविद्यालय का पूरा परिचय भी दिया। परमपिता परमात्मा का यथार्थ परिचय चित्रों के माध्यम से उन्हें समझाया गया और भिक्षा मांगने की प्रवृत्ति से स्व-आत्मा के पालन तथा समाज और देश के लिए हो रही हानि तथा इससे उत्पन्न अन्य बुराइयों का भी विवेचन किया गया। सभी बहुत शान्त दत्तचित्त होकर के बहनों के सरल, मधुर उपदेश सुनते रहे। कार्यक्रम के अन्त में सर्व प्रथम उनसे यह सामूकि रूप से प्रतिज्ञा कराई गई कि भिक्षु कर्मशाला से ट्रेनिंग लेकर निकलने के पश्चात वे सीखे हुए काम द्वारा ही अपना जीविकोपार्जन करेंगे और भिक्षा भविष्य में कभी नहीं मांगेगे। तत्पश्चात् उन्हें प्रोजेक्टर शो पर विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' भी समझाई गई, जिसे देखकर भी वे प्रसन्न दिखाई देते थे। अन्त में ३ मिनट प्रभुस्मृति में बिठा कर कार्यक्रम का समापन हुआ और कर्मशाला के अधीक्षक महोदय ने धन्यवाद देते हुए समय प्रति समय आने का आग्रह किया।

सुन्दरतम श्रीकृष्ण आ रहे

सुन्दरतम श्री कृष्ण आ रहे
प्यारा सतयुग आ रहा!

सृष्टि चक्र के परिवर्तन के
सुन्दर शुभ दिन आ गये
असत् अशुभ के अंत हेतु
बादल विनाश के छा गये।

जग को नरक बनाने वाला
कलुषित कलियुग जा रहा।
पावन सतयुग आ रहा!

कल्प-कल्प वत् विश्व-रचयिता
गीता-ज्ञान सुना रहे
शिव अपने शालिग्रामों से
मंगल-मिलन मना रहे।

रोग-शोक पीड़ा-कुण्ठा से
मुक्ति विश्व फिर पा रहा!
प्यारा सतयुग आ रहा!

सतयुग के श्री कृष्ण सलोने
दैवी राजकुमार को।
शिव बाबा विरचित करते हैं
फिर अभिनव संसार को।

अटल-अखण्ड शांति का, सुख का
मंत्र गूंजता जा रहा!
प्यारा सतयुग आ रहा!

ब्रह्माकुमार 'शुक्ल', लखनऊ

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सुन्दर लाल, कमला नगर-दिल्ली

विभिन्न सेवा-केन्द्रों द्वारा १० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का बहुत ही उत्साह जनक समाचार मिला है, जिसका सारांश यहाँ उद्धृत है :—

भावनगर में नेत्रहीनों व अपंगों की सेवा—भावनगर सेवा-केन्द्र द्वारा वहाँ के अंध विद्यालय, बधिर विद्यालय, तीपा बाई विकास गृह व हरिजन बस्ती में आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रोजेक्टर शो तथा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विभिन्न ग्रामों में आयोजित प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर द्वारा अनेकानेक ग्राम वासियों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

लखनऊ के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गजगोर :—लखनऊ (पेपर मिल कालोनी में स्थित) सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न ग्रामों में आयोजित आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। इनमें से बहनेरा, मटवामऊ, सेमरा, मोसारा, अर्जुनपुर, सुमेरगंज, महमूदाबाद, हुलास खेड़ा, जहाँगीराबाद, जालानपुर आदि का नाम उल्लेखनीय है। इसी प्रकार हजरत गंज में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से दौलत देवी विद्या मन्दिर हाई स्कूल में तथा हरिजन कालोनी में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

पठानकोट में शिवपरिचय प्रदर्शनी :—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु पठानकोट सेवा-केन्द्र द्वारा ज्वाँवाला शहर, रेलवे स्टेशन, कोट-पटियाँ एवं ज्वाली आदि स्थानों पर शिव परिचय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्थानीय समाचार पत्रों में भी लेख व सम्माचार प्रकाशित हुए, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने पढ़कर परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

सम्बल पुर में कैदियों की सेवा :—सम्बलपुर सेवा केन्द्र द्वारा स्थानीय जेल में लगभग ३०० कैदियों से बुराई छुड़वाने तथा एक गुण धारण करने के फार्म भरवाये गये। इसी प्रकार जीरा शहर में भी आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रदर्शनी का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

सहारनपुर में विभिन्न कार्यक्रम :—१० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सहारनपुर के विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त जेल में कैदियों के समक्ष प्रवचनों एवं प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम हुआ तथा लाइब्रेरी में ईश्वरीय साहित्य रखा गया। बुराइयाँ छोड़कर सद्गुण धारण की भी अनेकों को प्रेरणा दी गई।

मुजफ्फर नगर में अपंगों एवं हरिजनों की सेवा—मुजफ्फरनगर के कुष्ठ रोग आश्रम में 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी, का आयोजन किया गया; जिससे १०० कुष्ठ रोगियों ने लाभ उठाया तथा बीड़ी, सिगरेट, शराब व सिनेमा आदि बुरी आदतें त्यागने की प्रतिज्ञा की। हरिजन बस्ती तथा ग्राम हलाबास, पुर में आयोजित प्रदर्शनी से भी हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध तीर्थ शुक्रताल पर आयोजित मेला के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी द्वारा भी अनेकानेक प्रभु भक्तों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया।

श्री गंगानगर में १० सूत्री कार्यक्रम :—श्री गंगानगर की हरिजन कालोनी मोची कालोनी तथा हनुमान मन्दिर में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा आध्यात्मिक प्रवचनों एवं राजयोग शिविर का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। अनेकों ने धूम्रपान, मांसाहार आदि बुराइयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

मेहसाना में हरिजन कल्याण कार्यक्रम :—मेहसाना सेवाकेन्द्र द्वारा तरेटी ग्राम में 'दलित उत्थान आध्यात्मिक समारोह' का आयोजन किया गया, जिसके फलस्वरूप धूम्रपान, मांस खाना, शराब पीना आदि बुरी आदतें छोड़ने की अनेकों ने प्रतिज्ञा की। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती मानसा शहर में अयोजित प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर से हज़ारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

तिनसुकिया में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश :—तिनसुकिया सेवा केन्द्र की ओर से डिगबोई पिंगरी एवं डिब्रू गढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

बम्बई में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनी :—बम्बई (गायदेवी) सेवाकेन्द्र की ओर से शहर के चार प्रमुख भागों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे हज़ारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

कोल्हापुर हरिजन एवं महिलाएं कल्याण कार्यक्रम :—कोल्हापुर सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की हरिजन बस्ती में प्रवचनों एवं प्रोजेक्टर शो का आयोजन हुआ तथा महिलाओं के कल्याणार्थ विभिन्न स्थानों पर प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ, जिसमें अनेक महिलाओं ने भाग लिया।

बेलगाम में अपंग एवं कैदी सेवा सप्ताह :—बेलगाम सेवाकेन्द्र द्वारा अपंगों एवं कैदियों की सेवार्थ एक सप्ताह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वहाँ के अनेकानेक लोगों ने बुराइयाँ छोड़कर सद्गुण धारण करने की प्रतिज्ञा की।

हाँसी में १० सूत्री कार्यक्रम :—हाँसी और तोशाम सेवा केन्द्रों की ओर से बुवानी, खेड़ा, जमालपुर तथा तलवंडी आदि ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा अनेक निकटवर्ती ग्रामों में आयोजित प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा बुराइयाँ छोड़कर सद्गुण धारण करने की प्रेरणा दी।

लुधियाना में कैदियों, हरिजनों तथा अपंगों की सेवा :—लुधियाना सेवा केन्द्र की ओर से डिस्ट्रिक्ट जेल में अधिकारियों की सहमति से त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे लगभग १०० कैदियों ने लाभ उठाया। वहाँ की हरिजन बस्ती के बाल्मीकी मन्दिर में विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा बहनों ने प्रवचनों द्वारा उन्हें बुराइयाँ छोड़ कर सद्गुण धारण करने की प्रेरणा दी। इसके अतिरिक्त वहाँ के कुष्ठ रोगी आश्रम में भी बहनों के प्रवचन हुए।

कोयम्बटूर में १० सूत्री कार्यक्रम :—कोयम्बटूर सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनी, प्रवचनों एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया तथा प्रेस कान्फ्रेन्स द्वारा १० सूत्री कार्यक्रम की रूप-रेखा स्पष्ट की गई। स्थाई समाचार पत्रों में इस विषय पर संक्षिप्त लेख प्रकाशित हुए।

सोलन में ग्रीष्म-कालीन समारोह :—सोलन सेवा केन्द्र की ओर से ग्रीष्म-कालीन समारोह के अवसर पर अध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे हज़ारों टूरिस्ट एवं शहर वासियों ने लाभ उठाया।

करनाल में १० सूत्री कार्यक्रम :—करनाल सेवाकेन्द्र की ओर से अपंगों, कोढ़ियों तथा हरिजनों की की सेवार्थ आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन एवं प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम हुआ, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने बुराइयाँ छोड़कर सद्गुण धारण करने प्रतिज्ञा की।

होशियार पुर में कैदियों एवं हरिजनों की सेवा —होशियारपुर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ की जेल में कैदियों के लाभार्थ आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ, जिससे लगभग ३०० कैदियों ने लाभ उठाया। वहाँ की हरिजन बस्ती में बहनों के प्रवचन हुए, जिससे अनेक लोगों ने बुराई छोड़ कर सद्गुण धारण करने की प्रतिज्ञा की।

जयपुर में महिलाओं एवं विकलाँग की सेवा—जयपुर (राजा पार्क) सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के विकलाँग प्रशिक्षण केन्द्र में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया, जिससे लगभग १०० विकलांगों ने लाभ उठाया, अनेकों ने मदिरापान तथा धूम्रपान छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसके अरिक्त वहाँ के सवाई मानसिंह अस्पताल तथा

सिंधी कालोनी में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा अनेकानेक आत्माओं को श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

जोगिन्दर नगर के उद्योग मेले में सेवा :— जोगिन्दर नगर में आयोजित 'उद्योग मेला' के एक विशाल पण्डाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। वहाँ के विभिन्न स्कूलों एवं मन्दिरों में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए।

पाली में कैदियों की सेवा :— पाली सेवा-केन्द्र की ओर से हरिजन बस्ती में हरिजनों व पिछड़े वर्गों के लोगों के लिए तथा जेल में कैदियों के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उनसे सिगरेट, शराब, क्रोध आदि बुराइयां छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। इसके अतिरिक्त पटेल नगर में आयोजित प्रदर्शनी से भी अनेकों ने लाभ उठाया।

महबूब नगर में राजयोग प्रदर्शनी :— गुलबर्गा सेवा केन्द्र की ओर से महबूब नगर में राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वहाँ के कलेक्टर ने किया। प्रदर्शनी से लगभग १०००० लोगों ने लाभ उठाया तथा इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त पोस्ट ऐण्ड टेलीग्राफ आफिस के मनोरंजन कक्ष, आई० टी० आई०, महिला कल्याण विभाग, इण्डियन काउन्सिल आफ सोसियल वर्क्स तथा टाउन हाल आदि में फिल्म शो, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया।

तेजपुर में विभिन्न कार्यक्रम :— तेजपुर सेवा केन्द्र की ओर से अनेक अशान्त तड़पती हुई आत्माओं को शान्ति का दान देने हेतु विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इनमें से कृष्णा एण्ड कम्पनी, तेली गांव तथा रंगाशकना गांव का नाम उल्लेखनीय है।

जगन्नाथपुरी में रथ यात्रा महोत्सव पर कार्यक्रम :— रथयात्रा-महोत्सव के अवसर पर पुरी में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से दस दिनों के लिए वहाँ के प्रमुख स्थान पर "विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया, जिसे एक लाख से भी अधिक लोगों ने देखा, जिनमें अनेक साधु-महात्मा, विदेशी पर्यटक, तथा भक्त सम्मलित थे। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के प्रमुख स्थान हाडीसाही व हरिजन बस्ती में आयोजित कार्यक्रम भी बड़े सफल रहे।

जोधपुर के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गजगोर :— जोधपुर सेवा-केन्द्र की ओर से लूनी जंक्शन में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिससे अनेक रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ की सैन्ट्रल जेल में कैदियों के लाभार्थ आयोजित कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

तिरुपति में विभिन्न कार्यक्रम :— तिरुपति सेवाकेन्द्र की ओर से यहाँ आर्ट कालेज हाल, बार एसोसियेशन, अनामाचार्य कलामन्दिर तथा महिला एसोसियेशन में प्रवचनों, प्रोजैक्टर शो एवं राजयोग शिविर का आयोजन हुआ, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

कलकत्ता में हरिजन उत्थान कार्यक्रम :— कलकत्ता के हाथी बागान में हरिजनों के लभार्थ चरित्र उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन हरिजन युवक संघ के अध्यक्ष तथा कलकत्ता नगर निगम क्लब के सभापति भ्राता मेवालाल दास ने किया। अनेकानेक आत्माओं ने प्रदर्शनी देखकर बुराइयाँ छोड़कर दिव्य गुण धारण करने की प्रेरणा ली।

रोपड़ के कुष्ठ आश्रम में कार्यक्रम :— रोपड़ सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के कुष्ठ आश्रम में स्थित शिव मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसका साचार वहाँ के समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ, काफी संख्या में लोगों ने इस प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

गांधी नगर (गुजरात) में विभिन्न कार्यक्रम :—
गाँधीनगर में स्थित सेवा केन्द्र ...

लायन्स क्लब, सचिवालयस्टाफ एसोसियेशन हाल जीमखाना क्लब, रंगमंच मंडप आदि में प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम हुआ, जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। वहाँ के सेन्टजेविर स्कूल व अन्य स्थानों पर भी आयोजित कार्यक्रम बड़े ही सफल रहे।

लीड्स (लण्दन) तथा सिडनी (ग्रास्ट्रेलिया) में दीदी निर्मल शान्ता जी का भव्य स्वागत :—दीदी निर्मल शान्ता जी, रमेश भाई एवं पुष्पा बहन द्वारा विदेशों में की गई सेवाओं का समाचार समय प्रति समय आता ही रहता है। उनके लण्दन (लीड्स) में पहुँचने पर वहाँ के मेयर ने उनका भव्य स्वागत किया तथा शहर के अनेक प्रतिष्ठित नागरिक उनसे मिलने आये। वहाँ समाचार पत्रों में भी दीदी जी की विदेश यात्रा का विस्तृत समाचार प्रकाशित किया है।

राखी का त्योहार

ब्रह्माकुमार रामऋषि, लखनऊ

सब पर्वों में पर्व अनूठा राखी का त्योहार है।

क्या है पावन प्रेम—बताता, राखी पर्व महान है,
पावन प्रेम— मनुजता को, जो ईश्वर का वरदान है।

इसी प्रेम की पृष्ठ भूमि में, विरचित यह संसार है,
सब पर्वों में पर्व अनूठा, राखी का त्योहार है।

कोई भाई किसी बहन का, जैसे करता त्राण है,
परमपिता शिव इसी तरह करते जग का कल्याण हैं।

पतन-पराभव से संसृति का, प्रभु करते उद्धार हैं,
संकट में संरक्षणदाता, राखी का त्योहार है।

राखी में संदेश भरा है, पावन-निर्मल दृष्टि का,
दैवी मानवता का, नूतन सुखमय दैवी सृष्टि का।

राखी सच का विजय-पर्व है और झूठ की हार है,
सब पर्वों में पर्व अनूठा, राखी का त्योहार है।

यह चित्र दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत आगरा सेवा-केन्द्र द्वारा हरिजन बस्ती में आयोजित प्रदर्शनी का है। चित्र में भ्राता बाबूलाल चौधरी के साथ वहाँ के बहन-भाई खड़े हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, १५१-ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर
D (D) 178

यह चित्र मानसा (गुजरात) में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० सरला जी प्रवचन कर रही हैं, मंच पर वहाँ के आर्ट कालेज के प्रधानाचार्य के साथ वहाँ के बहन-भाई बैठे हैं।

नीचे के चित्र में बल्लभगढ़ में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के विधायक भ्राता राजेन्द्रसिंह टेप काटकर कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० प्रकाश व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र मदनपल्ली सेवा-केन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का है। वहाँ के प्रसद्धि स्वामी प्रमोद चैतन्य जी सेवा केन्द्र पर पधारे थे। वे वहाँ के बहन-भाइयों के बीच में बैठे हैं।

यह चित्र जगन्नाथ पुरी में आयोजित 'कन्याओं की ट्रेनिंग' के अवसर का है। उड़ीसा के विभिन्न सेवाकेन्द्रों से आई हुई कन्याएँ योग में बैठी हैं। ब्र० कु० निरूपमा, बिन्दु, रुकमणी, कमलेश आदि मंच पर बैठी हैं। ↓

यह चित्र लखनऊ सेवा-केन्द्र द्वारा वहाँ की हरिजन कालोनी के एक स्कूल में आयोजित प्रदर्शनी का है। ब्र० कु० मधुबाला स्कूल के मैनेजर व अन्य शिक्षकों को प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या दे रही है।

Regd No. D(D)178

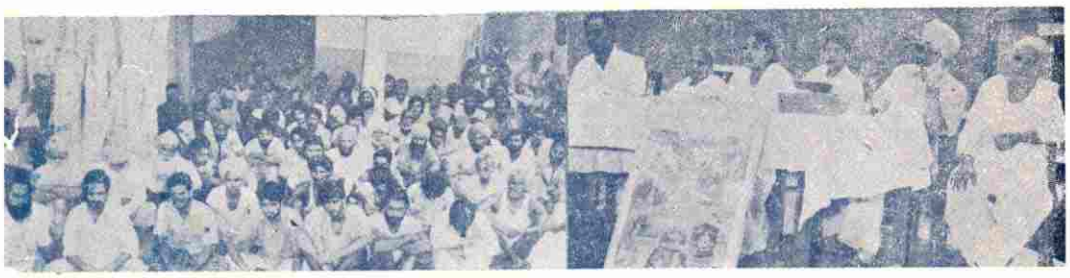

यह चित्र होशियारपुर जेल में आयो जत आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ब्र० कु० सुषमाजी प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर वहाँ के डी० एस० पी० बैठे हैं। कैदी बड़े ध्यान पूर्वक बहनों के प्रवचन सुन रहे हैं।

यह चित्र पोखरा (नेपाल) में आयोजित आध्यात्मिक → प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। वहाँ के अंचलाधीश टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० सुरेन्द्र, ब्र० कु० परनीता व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

नीचे का चित्र वारंगल सेवा केन्द्र द्वारा विजयवाड़ा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। प्रिंसिपल राघवाचारी जी प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर ब्र० कु० सविता, मंजु, शकुन्तला एवं भ्राता सुब्बाराव बैठे हैं। ↓

यह चित्र लुधियाना के कौड़ी हाल में आयोजित कार्यक्रम का है। ब्र० कु० अशोक प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर ब्र० कु० सरस जी एवं कंचन जी बैठी हैं। ↓

नीचे के चित्र में नासिक में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता साँसवडकर जी कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० गीता व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

इस चित्र में पुरी में रथ यात्रा के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के एक कालेज के प्रिंसिपल भ्राता मृत्युंजय पण्डा जी टेप काटकर कर रहे हैं, साथ में ब्र० कु० निरुपमा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं। ↓